वार्षिक पत्रिका

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

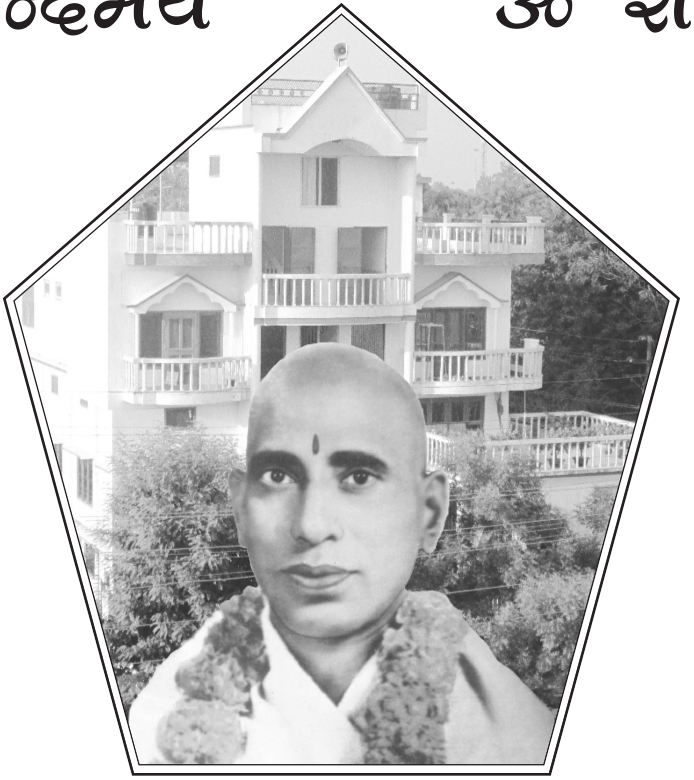

प्रकाशक

श्री विश्वशान्ति आश्रम

त्रिवेणीपुरम्, झूँसी-इलाहाबाद

प्रेरणास्त्रोत : आनन्द किरन जी आनन्दमय

संपादक : आनन्दमय- नन्द लाल सिंह

सलाहकार : सभी आनन्दमय भगवत् भक्तजन

संयोजक : आनन्दमय- ओम प्रकाश सिंह

: आनन्दमय- लवकुश भगवन

आशीर्वाद : प्रभु पिताजी एवं समस्त भगवन लोगों का

अक्षर संयोजन : शची कम्प्यूटर्स, 105-एफ/4,

ॐ गायत्री नगर, इलाहाबाद। Mo. 9839873793

प्रकाशक : श्री विश्वशान्ति आश्रम

जी॰ ए॰ I-13, त्रिवेणीपुरम, झूँसी,

इलाहाबाद-211019

www.svsashram.com

Email : president@svsashram.com

publisher@svsashram.com

editor@svsashram.com

दूरभाष : 0532-2569614

मोबाइल : 9235400255, 9319372829

संस्करण : आठवाँ (2015)

सेवा मूल्य : ₹ 30/-

संपादकीय

समय के साथ-साथ जीवन की परिधि कुम्हार की चाक की मानिंद एक निश्चित पात्र का आकार देने के पश्चात् उसकी रफ्तार क्रमशः थम जाती है और मानव जीवन लीला समाप्त हो जाती है; लेकिन श्रद्धा, भक्ति और भाव से युक्त चाक की रफ्तार कभी कम नहीं होती अपितु यह निरन्तर बढ़ती ही जाती है। यदि निष्काम कर्म द्वारा पूर्ण समर्पण भाव से इस जीवन रूपी चाक को गति दी जाये तो इसकी रफ्तार इतनी तेज हो जायेगी कि प्रभु पिताजी तक पहुँचने में देर नहीं लगेगी और पलक झपकते ही उनके दर्शन होने लगेंगें।

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' पत्रिका का यह आठवाँ संस्करण ॐ आनन्दमय भगवान के ज्ञान से परिपूर्ण लोगों को श्रद्धा-भाव, सेवा-भाव और निष्काम-भाव का पाठ सिखाता है; जिसके सहारे साधारण लोग भी भगवत् प्रेमी बनकर सत्कर्म में लग जाते हैं। भगवद्गीता के विभिन्न श्लोकों का अर्थ ऐसे व्यवहारिक रूप में समझाया गया है, जिसे हम साधारणतः रूप में समझ सकते हैं और उसे धारण कर अपने जीवन रूपी नाव की पतवार को उसी ओर मोड़ कर अपना मानव जीवन सार्थक बना सकते हैं।

पत्रिका जहाँ एक तरफ लोगों को ज्ञान देकर भगवत् प्रेमी बनाने का कार्य करती है तो दूसरी तरफ प्रभु पिताजी के ज्ञान को धारण कर जीवन यापन करने वाले भगवत् प्रेमियों के अनुभवों को भी प्रकाशित कर औरों के लिए प्रेरणादायक बनती है। यदि साधारण व्यक्ति भी पत्रिका में प्रकाशित ज्ञान और अनुभव का गहन अध्ययन कर उसका पालन करे तो निश्चय ही उसका जीवन एक न एक दिन सेवा-भाव से युक्त होकर प्रभु पिताजी के सन्मार्ग में स्वतः ही संचालित होने लगेगा।

(नोट– समस्त भगवत् प्रेमियों से निवेदन है कि अपने अनुभवों को लिखित रूप में आश्रम में प्रेषित करते रहें, जिससे कि नये भगवत प्रेमियों और अन्य संसारिक मनुष्यों के लिए आपका अनुभव प्रेरणास्त्रोत बन सके। यह भी एक आवश्यक सेवा है; इसे उपेक्षित न करें।)

हरिद्वार आश्रम की वाटिका में लौकी का दर्शन कराते हुए गुरुजी

ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार करते हुए गुरुजी

इलाहाबाद आश्रम में लगे नींबू के फल

हरिद्वार आश्रम में वाटिका की सेवा करते भगवत् प्रेमी

श्री योगसिद्ध दिव्य महामंत्र की महिमा

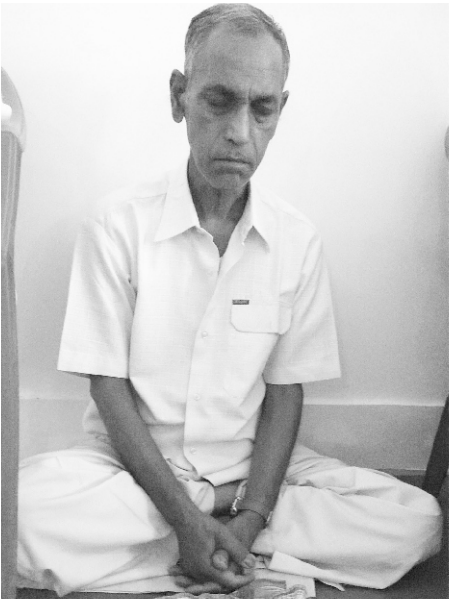

मुझे बचपन से धार्मिक सत्संग का वातावरण मिलता रहा। मेरे माता-पिता जी ॐ आनन्दमय सत्संग के अनुरागी थे। मैं भी उनके साथ सत्संग में जाता था जिससे मेरे अन्दर भगवत् कृपा शक्ति का अनुभव हो गया था। आज उसी कृपा-शक्ति का एक अनुभव प्रेषित कर रहा हूँ–

मैं मध्य प्रदेश के सीधी जिले का निवासी हूँ। बहुत दिनों पहले की बात है, बस से मैं एक दिन बाजार के कार्य से सीधी जा रहा था। सीधी पहुँचने से पूर्व ही बस के सामने से ट्रक आ रही थी। नाले का पुल था, बस ने साइड दिया ट्रक निकल गई। पुल धसनें लगा और बस पलटने लगी। बाईं तरफ किनारे शीशे की तरफ बस गिरने लगी। बगल की पूरी छल्ली मेरे ऊपर लद गई। चारो ओर हल्ला मचा, मेरे सामने अँधेरा छा गया। मैं 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र जपता हुआ शीशे की तरफ हाथ अड़ाकर दब गया, इतने में धम्म से आवाज हुई और मैं बेहोश हो गया। आधे घण्टे बाद गाँव के एक आदमी ने मुझे खींचकर निकाला। जब मुझे होश आया, तो देखा कि सभी लोग घायल थे किसी का सिर फूटा था तो किसी का हाथ पैर टूटा था। गाड़ी का शीशा चकनाचूर हो गया था। मैं जिस शीशे के पास बैठा था वह बचा था अन्यथा नाले में बड़े-बड़े पत्थर थे, कही मेरे शीशे के नीचे पड़ता तो मेरा भी सिर फूट जाता। किन्तु मुझे ॐ आनन्दमय भगवान ने बाल-बाल बचा लिया। लोगों ने कहा कि तुम बड़े किस्मत वाले थे। किन्तु यह महामंत्र का ही प्रभाव था।

तुच्छ सेवक– हरिशंकर, सीधी, मध्य प्रदेश

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का जाप करने से मेरा हृदय बहुत शान्त रहता है और मुझे क्रोध भी नही आता है

मैं तैबा सिद्दिकी, जब ध्यानयोग के दिव्य वातावरण में गई, मुझे अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हुई। अब बहुत प्रसन्न रहती हूँ और 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का जाप करने से मेरा हृदय बहुत शांत रहता है और मुझे क्रोध भी नहीं आता है। उस शान्त वातावरण में कदम रखते ही मेरे हृदय को बहुत शान्ति मिली। मेरा तो मन ही नहीं करता वहाँ से आने को, मन करता है बस वहीं बैठी रहूँ और महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप करती रहूँ। यह मंत्र अत्यधिक लाभदायक है।

मैं ऐसे शिविर में पहले कभी नहीं गई थी। वहाँ पहुँचते ही ऐसा लगा कि जैसे मेरी सारी चिन्ताएं नष्ट हो गई है। मेरा पहले पढ़ाई में दिल (मन) नहीं लगता था परन्तु जब से मैंने ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप करना प्रारम्भ किया है तब से मुझे पढ़ने में रुचि प्राप्त हुई। मुझे इस शिविर में अत्यधिक सुख व शान्ति प्राप्त हुआ। मैंने अपने मित्रों को भी इसके बारे में बताया वे भी अब इस शिविर में आने लगे हैं अब वे भी बहुत प्रसन्न व परेशानियों से मुक्त रहते हैं। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप बहुत लाभदायक है।

–तैबा सिद्दिकी

कक्षा-१० कानपुर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान के नाम-रूप को घड़ी यंत्रवत् हर समय याद करने का अभ्यास करना, इन्द्रियों के विषय-भोगों से वैराग्य करना, राज-विधान के अनुकूल आर्थिक आय करते हुए, सात्त्विक सेवा में व्यय करना और सात्त्विक गुणों को धारण करना, यह जीवन को आनन्दमय-शान्तिमय बनाने का सुगम साधन है।

मन की बात-

उसी दिन से मेरा विश्वास ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान जी में दृढ़ हो गया

भगवन मैं एक अध्यापिका हूँ, आनन्दमय प्रभु जी के लिए मुझे भी दो शब्द लिखने का अवसर प्राप्त हुआ, मन तो मेरा बहुत अरसे से करता था कि मैं भी 'ॐ आनन्दमय पिताजी' की कृपा के बारे में सबसे कहूँ पर डर लगता था कि पता नहीं सही लिख पाऊँगी या नहीं, पर शायद भगवान जी को मेरी बात सुनाई दे गयी और स्वयं भगवन 'आनन्द किरन जी' ने आदेश दिया। भगवन अनुभव तो इस छोटे से समय में बहुत हुए, मगर एक अनुभव ऐसा हुआ, जिसने मुझे और मेरे परिवार को अन्दर तक झकझोर दिया। भगवन मैं आश्रम से सन् २००३ में जुड़ी मगर बस लगता था कि आश्रम गये और आ गये, मैं अपनी सही बात कहूँ तो मेरा सत्संग और ध्यान में मन ही नहीं लगता था। बस सबके साथ चली जाती थी। ये क्रम सन् २००४ तक चलता रहा, मगर जब सन् २००५ में मुझे पुत्र रत्न प्राप्त हुआ, उस समय भगवान जी ने अपनी लीला मुझ पर दिखायी, मैं जिस द्वन्द्व से परेशान थी, वह मेरा मन ही जानता था, मगर कहते हैं ना कि दुःख में कोई याद नहीं आता, आते हैं तो बस 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान' याद आते हैं। और यही मेरे साथ हुआ, मैंने भगवान जी से हाथ जोड़कर क्षमा माँगने लगी और जिस काम की मुझे उम्मीद नहीं थी और मैं बहुत परेशान थी तथा मैं काम के लिए निराश हो गयी थी, वह काम मेरा ऐसा हुआ, कि मुझे लगा जैसे साक्षात भगवान जी उतर कर आये हो, उसी दिन से मेरा विश्वास ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान जी में दृढ़ हो गया, हम सभी परिवार सहित आश्रम जाते और सत्संग में शामिल होते, फिर सन् २०१२ में मेरे पति श्री धर्मेन्द्र जी का नम्बर दरोगा की परीक्षा में आया, जिसमें उन्हें १० कि०मी० की रेस करनी थी, श्रीमान् जी रेस से १५ दिन पहले तक बिल्कुल सही स्वस्थ थे, मगर अचानक एक दिन वो प्रैक्टिस से आये और कहने लगे कि मेरी कमर में दर्द है। पता चला कि उनकी डिस्क स्लिप हो गयी है। जिन्दगी में जैसे एक तूफान सा आ गया, इतनी मेहनत से यहाँ तक पहुँचना और ऐसा होना। हम सब बहुत परेशान रहने लगे, मुरादाबाद के सब डाक्टरों ने जबाब दे दिया कि रेस तो क्या आप सही से चल भी नही सकते, बस फिर क्या था, ये चिन्ता में रहने लगे और मैं यही सोचती कि प्रभु मैंने कहाँ गलत कर दिया, मगर प्रभु पिताजी तो सब जानते थे, उन्हें तो बस दिल में बसाने की देर है, एक दिन किसी का फोन आया और उन्होंने हमे बाबूगढ़में पट्टी बधवाने के लिए कहा, वहाँ जाकर पहली पट्टी में ही इन्हें आराम लगने लगा, मेरे लिए तो मानो उस वैद्य में पिताजी बसे थे। बस इन्हें फिर बिजनौर जाने की जिद चढ़गयी, हम वहाँ से अपने भाई विकल जी के यहाँ आ गये, विकल जी ने हमें एक ही बात कही कि पिताजी पर पूर्ण विश्वास रखो और सुबह शाम सत्संग करो विकल जी भगवन् के सानिध्य में रहकर इन्होंने सुबह शाम सत्संग किया, और बाकी समय विकल जी ने इन्हें धीरे-धीरे चलने की प्रैक्टिस कराई, भगवन जिस दिन रेस होनी थी, उससे एक दिन पहले ये घबरा रहे थे कि मैं रेस नहीं लगा पाऊँगा १० किलोमीटर बहुत होते हैं। इसी बीच में इन्हें वायरल फीवर भी हो गया था, बहुत कमजोरी आ गयी थी, फिर भी विकल जी इन्हें अपने साथ हिम्मत बधाते हुए ले गये, वहाँ जाकर रेस में चिन्ता में थे, कि मैं सुबह कैसे रेस लगाऊँगा? रेस मेरठ में थी, भगवन पिताजी की कृपा ऐसी हुई कि सुबह ८ बजे से ही भारी बारिश होने लगी और ग्राउण्ड में पानी भर गया, मुझे पता था फिर पिताजी ने ही यह चमत्कार किया था। रेस ७ दिन पीछे हट गयी और इन्हें ७ दिन का टाइम और मिल गया, फिर सात दिन बाद ये गये, फिर बारिश पड़ी और रेस फिर चार दिन पीछे हट गयी। क्योंकि पिताजी को पता था, कि मेरा बच्चा अभी रेस के लिए फिट नहीं है। जब रेस का फाइनल दिन आया तो ये मेरे से कहने लगे में कैसे भागूँगा मुझे बहुत कमजोरी महसूस हो रही है। मैंने कहा बस ग्राउण्ड में उतरकर पिताजी भगवान का हाथ पकड़ लेना और ऐसा ही हुआ, नौवे चक्कर से ये कहते हैं कि मुझे नहीं पता मुझे कौन भगा रहा था पर मुझे पता था वह मेरे ॐ आनन्दमय पिताजी थे, जिन्होंने सच में ही इनका हाथ पकड़ा था और रेस खुद लगायी थी और आज ये उप निरीक्षक चौकी इंचार्ज हैं। मैं तो मरते दम तक पिताजी कि कृतज्ञ रहूँगी कि उन्होंने मुझे अपने

चरणों में जगह दी। मैं अपने आप को भाग्यशाली मानती हूँ कि मैं भाई विकल जी की बहन हूँ क्योंकि हमें इस सत्यपथ के बारे में बताने वाले व मार्ग दर्शन करने वाले विकल जी ही हैं। उन्होंने हमें रास्ता बताया और हम पिताजी के पीछे चल दिए अब जब भी आश्रम जाते हैं। तो वहाँ से आने का मन ही नहीं करता, बस लगता है कि स्वर्ग यही है। सत्संग करके कुछ याद नहीं आता, आते हैं तो ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय याद आते हैं। आज मैं और मेरा परिवार जो कुछ भी है। इस मंत्र और पिताजी की कृपा के कारण है। क्योंकि जीवन का सब सार इस एक मन्त्र में ही छिपा है। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'। कमी है तो बस हमारे दिल से पुकारने की, पिताजी तो हर समय तैयार रहते हैं। क्योंकि माता-पिता बच्चों के लिए किसी बुलावे का इन्तजार नहीं करते बस—

बहा दो प्रेम के आँसू
तो बस दौड़ा चला आऊँ मैं
तो बस दौड़ा चला आऊँ मैं।

ॐ शान्तिमय

श्रीमती सुचित्रा अध्यापिका, मुरादाबाद।

इस महामंत्र के जाप से मेरा क्रोध पर नियंत्रण हो गया और पढ़ाई में मन भी लगने लगा

ध्यानयोग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे अत्यन्त ही शान्ति और आनन्द की अनुभूति हुई। मैंने जब से इस शिविर में बताए गए मंत्र को जपना शुरु किया जो कि 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' है तब से मुझे शान्ति का आभास होने लगा। यह मंत्र बहुत ही कल्याणकारी है। मुझे इसका अनुभव प्राप्त हुआ है। पहले मैं बहुत परेशान रहती थी क्योंकि मुझे अत्यन्त ही क्रोध आता था और दूसरों को कुछ भी बोल देती थी परन्तु जब से मैंने इस मंत्र का जाप करना प्रारम्भ किया तब से मेरा क्रोध पर नियंत्रण हो गया। मेरे लिए यह मंत्र अत्यन्त ही लाभकारी तथा कल्याणकारी सिद्ध हुआ है। श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के स्वाध्याय द्वारा तथा वहाँ पर तीन दिवसीय ध्यानयोग शिविर के प्रात:कालीन सत्र में उपस्थित रहने के पश्चात मैंने अपनी मानसिक शक्ति का विकास महसूस किया। पहले मेरा मन पढ़ाई में भी नहीं लगता था तथा मैं विचलित रहती थी कि मैं अपनी परीक्षा कैसे उत्तीर्ण करुँगी? परन्तु, जबसे इस मंत्र का पता चला तब से मैं इसे जपने लगी और मैंने अपनी परेशानी पर नियंत्रण पाया मैंने परीक्षा भी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

यह शिविर किसी धर्म पर आश्रित नहीं है बल्कि यहाँ किसी भी धर्म-जाति के लोग आ सकते हैं तथा शान्ति का अनुभव कर सकते हैं यहाँ का वातावरण अत्यन्त ही शान्त तथा सुखमय है।

इस शिविर में जो भी आता है उसे अत्यन्त ही शान्ति तथा सुख का अनुभव होता है। मुझे इस शिविर में इतनी शान्ति तथा सुख मिलता है कि मैं इस शिविर में अनेक बार आना चाहती हूँ। मुझे यह शिविर अत्यन्त ही शान्तिपूर्ण लगता है। मैं इसके विषय में और क्या कहूँ, इसके लिए मेरे पास और शब्द ही नहीं हैं।

—फरहीन फातिमा
कक्षा-१० कानपुर

गोपनीय रहस्य के ज्ञान को जानने से ही अमूल्य तत्त्व की प्राप्ति होती है।

प्रतिकूल वातावरण, घटनायें, एकाएक आनेवाली विषमताओं के आने के पहले जो स्थिति है वह कच्ची होती है। अभक्तों की, स्वेच्छाचारियों की होती है। हाँ इन घटनाओं में परिस्थितियों के पश्चात् सहनशीलता, गम्भीरता, प्रसन्नता, शान्ति, सन्तोष आदि गुणों की जो स्थिति प्राप्त होती है। वही पक्की होती है। श्री गीता अ० २ श्लोक ५६, अ० १ २ श्लोक १७,१८,१९।

और इसका परम फल क्या प्राप्त होता है। अ०१ २ श्लोक २०। ॐ शान्तिमय

मन को वश में करने के लिए ॐ आनन्दमय भगवान की भक्ति और समय निकालकर प्रचार पूजा भी करनी चाहिये

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' एक ऐसा महामंत्र है जिसको जपने से हृदय को शान्ति प्राप्त होती है। अतः हमें पढ़ाई करने के साथ-साथ अपने मन को वश में करने के लिए ॐ आनन्दमय भगवान की भक्ति और समय निकालकर प्रचार पूजा भी करनी चाहिये तथा हर समय ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र जपते रहना चाहिये। इसे जपने से सारे दिमागी संकट दूर होते हैं। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र के जाप में ही इतनी शक्ति है कि अगर हम इसका जाप करें तो हमें आनन्द शान्ति की प्राप्ति होती है, जो हमें एक अच्छे मार्ग की ओर ले जाते हैं। जो लोग इस महामंत्र का अनादर करते हैं, उन्हें जीवन में कभी सफलता प्राप्त नहीं होती। क्योंकि साधना से ही सिद्धि प्राप्त होती है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र जीवन की एक ऐसी कुञ्जी है जिसे पाकर मनुष्य धनवान हो जाता है। इस धन को कोई भी चोर चुरा नहीं सकता। यह मंत्र दिमागी संकटहारी है और ध्यान अमृत दायक है। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' के अध्यात्मिक ध्यान में उपस्थित होने से मेरे जीवन में काफी सुधार आया। ध्यान योग का मेरे मन पर ऐसा प्रभाव हुआ कि मेरा जीवन ही बदल गया। यह सब प्रभु पिता जी की कृपा है जो मैं ऐसी शान्ति तथा सरलता को प्राप्त कर पायी। भगवान से प्रार्थना है कि हम पर इसी तरह अपनी कृपा बनाये रखें। ॐ शान्तिमय

–सरिता सैनी, कक्षा-१२, चिरंजीलाल इण्टरमीडिएट कालेज, मुरादाबाद।

अब प्रातःकाल उठकर इस मंत्र का उच्चारण करता हूँ और इसके कारण मेरी याद करने की क्षमता में भी वृद्धि हुई है

मैं वहाँ पहुँचकर असीम शान्ति की अनुभूति कर रहा था। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मैं एक ऐसे वातावरण में आ चुका हूँ, जहाँ आकर मेरी चिन्ताएँ और मेरे मन को भटकाने वाली सोच नष्ट हो गई।

यहाँ आकर मुझे उस मंत्र की प्राप्ति हुई जिसके कारण मेरी कई समस्याओं का समाधान हो गया। मैं अब प्रातःकाल उठकर इस मंत्र का उच्चारण करता हूँ और इसके कारण मेरी याद करने की क्षमता में भी वृद्धि हुई है। मैंने यह मंत्र और इस दिव्य वातावरण के विषय में अपने अन्य मित्रों को भी बताया। अतः मैंने यह निश्चय कर लिया है कि मैं अब यहाँ बार-बार आऊँगा क्योंकि यह आश्रम किसी धर्म से जुड़ा हुआ नहीं है यह तो आश्रम ऐसे दिव्य वातावरण की अनुभूति कराता है और सुगम मार्ग की ओर ले जाता है।

अन्ततः मैं आपका बहुत आभारी हूँ और आपसे निवेदन करता हूँ कि आप ऐसे ही हम छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन करते रहें। ॐ शान्तिमय

–वसीम आरिफ
कक्षा-१० कानपुर

जिसकी बुद्धि काम, क्रोधादि मानसिक रोगों की शान्ति के लिए ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के सम्मुख रुदन नहीं करती, उस व्यक्ति का अहंकारी मन शारीरिक, आर्थिक अथवा सामाजिक विपत्तियों के कारण उसे आजीवन रुदन कराएगा।

....

मानसिक चिकित्सा के प्रभाव का माहात्म्य अपरिमित है और अनिर्वचनीय है। कम आयु के बालक-बालिकायें इस मानसिक चिकित्सा रूप गुणविद्या अध्ययन के विशेष पात्र हैं। मानसिक चिकित्सा की परानिष्ठा बाल्यावस्था में निर्विघ्नतापूर्वक सिद्ध होगी।

जब मेरा मन अत्यधिक विचलित होने लगता है तब मैं इसी मंत्र के द्वारा अपने मन को वश में कर पाती हूँ

जब मैंने शिविर के अन्दर प्रवेश किया तो वहाँ के लोगों के प्रेमपूर्ण व्यवहार को देखकर अत्यधिक अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ और आश्रम का शान्त वातावरण देखकर मुझे अधिक खुशी हुई कि आज मुझे विद्यालय से यहाँ आने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ पर मुझे यह भी पता चला कि सच्ची प्रेम भक्ति क्या है? वहाँ पर गुरु जी के सेवक लोग अपना कार्य बड़ी श्रद्धापूर्वक पूरा कर रहे थे यह सब देखकर मुझे काफी प्रेरणा मिली तब से मैं भी अपना कार्य स्वयं और श्रद्धापूर्वक करने की काफी कोशिश करती हूँ। वहाँ पर जो आँखें बन्द करके हम लोगों ने अपने ईष्ट देव का ध्यान किया उससे भी मुझे काफी कुछ सीखने को मिला है। ध्यान करने से हमारे मन की एकाग्रता बढ़ती है।

वहाँ पर जो हम सभी को दो पत्रिकायें मिली थी, मैंने उन्हें घर जाते ही पहले स्वयं पढ़ा और अपने छोटे-भाई और बहन, माता-पिता को पढ़ने के लिए दी। और वहाँ पर जो पंक्ति हम सभी को बोलने के लिये कही गई थी वे पंक्ति मैं सुबह-शाम अवश्य बोलती हूँ। मैं योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप करती हूँ। इससे जीवन में विशेष परिवर्तन हुआ है। और जब हम सभी वापस घर लौट रहे थे तब हम लोगों ने प्रसाद भी ग्रहण किया। वहाँ से हम लोगों ने कई अच्छी बातें अपने दिनचर्या में शामिल किया है। सच कहूँ तो हम सभी लोग बहुत भाग्यशाली हैं जो हम लोगों को विद्यालय से यहाँ आने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। जब मैं तीन दिवसीय ध्यानयोग शिविर के प्रात:कालीन सत्र में उपस्थित हुई तो ध्यानयोग शिविर के शान्तपूर्ण वातावरण में मेरा हृदय अत्यधिक खुश एवं प्रसन्न था। ध्यानयोग शिविर का दिव्य वातावरण मुझे आज भी स्मरण है। वहाँ पहुँचकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो किसी दिव्य शक्ति के द्वारा मेरा हृदय अत्यधिक शान्त हो गया। वहाँ का वातावरण अत्यन्त शान्ति से परिपूर्ण तथा सुखमय और मेरे हृदय को शान्ति प्रदान करने वाला था। उस शान्ति से परिपूर्ण वातावरण में जाने के लिए मेरा मन अत्यधिक उत्सुक था। ऐसे शान्त एवं प्रसन्नता देने वाले शिविर में मैं पहले कभी नहीं गई। वहाँ जीवन जीने का सूत्र बताया गया वह है– योगसिद्ध महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'! मुझे बताया गया कि इस मंत्र का जाप मैं कभी भी कर सकती हूँ यह मंत्र जीवन के लिए अत्यधिक कल्याणकारी है और ऐसा ही मैंने इस मंत्र को जप कर महसूस (अनुभव) किया। इस मंत्र को जपने से मेरी अनेक समस्याएँ भी हल हो जाती है, और जब मेरा मन अत्यधिक विचलित होने लगता है तब मैं इसी मंत्र के द्वारा अपने मन को वश में कर पाती हूँ। यह मंत्र सच में सुखमय, कल्याणकारी एवं सभी के हृदय को शान्ति पहुँचाने वाला है। शान्तिमय जीवन के लिए यह मंत्र अत्यधिक लाभकारी है। मैं इस शिविर में बार-बार आना पसन्द करूँगी।

–आयुषी अग्निहोत्री
कक्षा-१० कानपुर

तत्त्वदर्शी ब्रह्मवेत्ताओं की चेतावनी

कंचन तजना सहज है, सहज तिया का नेह, मान-बड़ाई, ईर्षा, दुर्लभ तजना येह।।

त्याग-वैराग्य का यद्यपि बहुत महत्त्व है। परन्तु वास्तविक सच्चे त्याग का महत्त्व है– त्याग का भी त्याग।

इस तत्त्वमय रहस्य की वाणी के तत्त्वज्ञ ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी ने श्री गीता अ० ३ श्लोक २ से ८ तक में समझाया है। फिर भी इस रहस्य को अन्य-अन्य प्रकार से समझाते हुए, श्री गीता अ० १६ श्लोक २३ में तत्त्व ज्ञानियों के विधान को अर्थात् उनके उपदेश-आदेश को त्यागकर स्वेच्छापूर्वक कर्म करने वालों की निन्दा की, फिर अन्त में कर्म-बन्धनों से मुक्त होने के लिये कल्याणकारी साधनों को करने के लिये तत्त्वज्ञानी महापुरुषों की आज्ञानुसार ही समस्त कर्म करने के लिये आदेश दिया। ''श्री गीता अ० ४ श्लोक ३४, अ० ३ श्लोक २१''

ॐ श्री आनन्दमय भगवान की कृपा दृष्टि बचपन से ही सदैव बनी हुई है

दिव्य गुणों के भण्डार, परम पूज्य, परम धाम, परम श्रद्धेय, नित्य स्मरणीय ॐ श्री आनन्दमय भगवान जी की पावन स्मृति करते हुए अपनी भावनाओं को शब्दों में लिखने का प्रयत्न कर रही हूँ–

ॐ श्री आनन्दमय भगवान की कृपा दृष्टि बचपन से ही सदैव बनी हुई है जिन्हें हम शब्दों के रूप में वर्णित करने का प्रयत्न करें तो प्रभु पिता जी की एक नई पुस्तक बन जायेगी। प्रभु-पिता जी की अनुभूति, लेखनी का विषय ही नहीं है। लेकिन हमारे अनुभवों से दूसरों को प्रेरणा मिले इसलिए लिखना भी आवश्यक है। परन्तु कुछ लिखने के पहले यह कहना चाहुँगी कि जितना भगवन्! प्रभु पिता जी की श्रद्धा, प्रेम और उनकी कृपादृष्टि को यह मन महसूस करता है, जानता है उतना ये वाणी और कागज, कलम व्यक्त नहीं कर सकती।

ॐ आनन्दमय भगवान की असीम अनुकम्पा से मुझे नवम्बर माह में मुरादाबाद सत्संग का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह मेरी पहली ट्रेन यात्रा थी जिसमें मुझे महापुरुषों का संग प्राप्त हुआ और इलाहाबाद से मुरादाबाद का सफर इतना आनन्दमय रहा कि एक पल भी नहीं लगा कि हम ट्रेन में हैं, प्रतीत तो ऐसा हो रहा था मानो सत्संग भवन में ही बैठे हो। इलाहाबाद से मुरादाबाद के सफर में हमने प्रभु पिता जी का भजन ध्यान किया। सभी भगवत् भक्तों के साथ मुरादाबाद स्टेशन पहुँच कर श्रीमती विमला बहन जी के निवास स्थान पर गये। भगवन् सब कुछ स्वप्न की तरह था। विमला बहन जी के यहाँ जलपान ग्रहण किया तथा उनके अटूट श्रद्धा-प्रेम-भक्ति को देखकर, प्रभु पिताजी के प्रति हृदय प्रसन्नता से परिपूर्ण हो गया।

महापुरुषों के प्रति अपार प्रेम की वर्षा तो मैंने मुरादाबाद के चिरंजीलाल इण्टर मीडिएट कालेज पहुँचने के बाद देखी, भगवन्! वहाँ के छात्र-छात्राओं का वर्णन करना बड़ा ही कठिन है मेरे लिए, क्योंकि भगवन् श्री नरेश जी ने उन छात्र-छात्राओं के अन्दर ऐसे आदर्श और महापुरुषों के प्रति श्रद्धा प्रेम उनके कोमल हृदय में भरा है कि यदि आप उस विद्यालय में खड़े हो जायेंगे तो क्षण भर में आपको अनुभव हो जायेगा। भगवन् पहले ट्रेन रूपी सत्संग और अब भवन रूपी सत्संग देखकर मन इतना अधिक प्रसन्न था कि मानो– 'प्रेम मग्न पुलकित भय नाचे'।

नवम्बर मास में ही मुझे बिजनौर सुन्दरपुर आश्रम के दर्शन हुए। आश्रम के समीप पहुँचकर एवं वहाँ के भगवत् भक्तों को सेवा करते हुए देखकर ऐसा लग रहा था कि मानो भगवान जी ने अपनी कृपादृष्टि का परिचय दिया हो। नवम्बर माह ठण्ड का मौसम था। हम बिजेन्द्र भगवन जी के यहाँ ठहरे हुए थे। भगवन्! बिजेन्द्र जी के परिवार के सदस्यों के सेवा भाव के विषय में क्या कहूँ! ठण्ड के मौसम में भी भाग-भाग कर सेवा कर रहे थे। प्रभु पिता जी ने इन्हें कितनी अपार असीम शान्ति दे रखी है। श्रीमती सविता जी रात्रि में तीन बजे ही जागकर सत्संग प्रेमियों के स्नान हेतु खुले आकाश के नीचे चूल्हे पर जल गर्म किया करती थी। सत्संग प्रेमियों को किसी प्रकार की परेशानी न हो, चाहे खुद को कितना भी कष्ट क्यों न सहना पड़े। इतना प्रेम, इतनी श्रद्धा और नि:स्वार्थ भाव से सेवा आज तक हमने अपने घरों में भी नहीं देखी। भगवन्! प्रभु पिताजी की असीम कृपा एवं छाँव का अनुभव पग-पग करते हुए पुन: ट्रेन रूपी सत्संग भवन में बैठकर वापस इलाहाबाद आ गये। हम प्रभु पिताजी के आदेशों की कितनी ही क्यों न अवहेलना करते हैं फिर भी प्रभु पिताजी की कृपादृष्टि सदैव हम भक्तों पर बनी रहती है। 'बस जायो कृपानिधान मोरे मन बस जायो'। बस यही प्रार्थना करते हुए मन में विचार आया कि प्रभु पिताजी जल्द ही बुलायेंगे।

और वह समय आ गया। परम पूज्य आनन्द किरन भगवन जी का एक दिन फोन आया और बोले बेटे २ जून का रिजर्वेशन कराया है बिजनौर सत्संग में चलना है। एक क्षण शान्त रहने के पश्चात् मैंने कहा जी भगवन् जी जरूर। भगवान जी का आदेश पारित हुआ है और अब आदेश का पालन करना ही है। भगवान जी की कृपादृष्टि के कारण कही आने-जाने पर घरवाले कभी भी विरोध नहीं किये क्योंकि भगवान जी ने एक बड़ी माँ (श्रीमती श्यामा जी गोहरी) दे रखी है जो सदैव सत्संग में हमारे साथ आती-जाती हैं, इनके नाममात्र से सारे प्रश्न-उत्तर वही समाप्त हो जाते हैं। भगवन् बचपन से ही मुझे आश्रम में एक दिव्य परिवार मिला जिसमें बड़ी माँ, बड़े भईया

(श्री अरविन्द गोहरी) और दादाजी की तरह प्रेम-स्नेह देने वाले ब्रह्मलीन श्री रिक्क्षन देव जी का सानिध्य मिला। इस प्रेम कुमारी नाम का अस्तित्व भी श्री रिक्क्षन देव जी ने ही दिया। वरना मैं आप सभी के चरणों की धूलि के समान भी नहीं हूँ। श्री रिक्क्षन देव जी के स्मृति मात्र से आँखों में आँसू आ जाते हैं। आज मैं दो शब्द भी उनके लिए लिख पाई हूँ तो प्रभु पिता जी के चरणों में कोटि-कोटि नतमस्तक प्रणाम!

भगवन्! नवम्बर माह की तरह फिर ट्रेन रूपी सत्संग भवन में महापुरुषों का संग प्राप्त हुआ और भजन-ध्यान करते हुए बिजनौर आश्रम पहुँचे। अब तो आश्रम का निर्माण काफी हो गया। आश्रम को भव्य रूप में देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। वाहन में बैठे-बैठे ऐसा लगा कि प्रभु पिताजी की शक्ति तीव्र गति से आश्रम की ओर खींच रही हो। आश्रम में भगवत् भक्तों को सेवा में रत देखकर ये पंक्ति याद आ गई– 'मन आनन्द मग्न सेवारत है यह तन'। नवम्बर माह में जिस आश्रम को देखा था उस आश्रम को आज भव्य रूप में देखकर आश्चर्य हुआ। पर कहते हैं न 'तेरी लीला अपरमपार प्रभु आनन्दमय, तु है सर्वशक्तिमान प्रभु आनन्दमय'। आश्रम को व्यवस्थित रूप में देखकर लगा कि इस बार नवादा जाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा। परन्तु प्रभु पिताजी का चमत्कार तो देखो २०-२५ मिनट ही हुए थे कि एक सूची आई जिसमें नवादा श्रीमती सविता जी भगवन् के यहाँ रुकने वाले भक्तों के शुभ नाम थे। सूची में स्वयं का नाम देखकर भगवान जी के श्री विग्रह को देखा मन ही मन में कहा हे प्रभु! आप बड़े चमत्कारी हो। पूज्यनीय आनन्दलता बहन जी, शकुन्तला बहन जी आदि के साथ रहने व उनकी सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

मन की खुशी आसमाँ को छू रही थी, आश्रम में ऐसा लगा कि जो कुछ है यही है इसके सिवा और कुछ भी नहीं है। 'जो भी आनन्दमय शरण में आया, परम आनन्द का लाभ उठाया।' यह कथन सत्य हो रहा था। जीवन में इतनी प्रसन्नता कभी न हुई। एक सप्ताह तक प्रातः एवं सायंकालीन सत्संग में पूज्यनीय आनन्दलता बहन जी के बगल एवं प्रभु पिताजी के सम्मुख बैठकर ऐसा लगता था कि सत्संग बस ऐसे चलता रहे– चलता रहे। इतनी ऊर्जा इतनी शान्ति, समता की अनुभूति होती थी कि बस मन यही कहता था, 'मोहे अपने रंग में रंग ले हे आनन्दमय भगवान!'

भगवन् ॐ आनन्दमय भगवान जी के भक्तों का हृदय प्रभु पिताजी ने इतना उत्साहवर्धक एवं प्रभावशाली बनाया है कि उनके छोटे से घरों में भी यदि सैकड़ों लोग चले जाये तो भी उनके माथे पर अंश मात्र भी परेशानी नहीं दिखती। उल्टा उनकी श्रद्धा-प्रेम भक्ति की लहरे उमड़-उमड़ कर शोभायमान होती है। बिजनौर में श्री वेदपाल जी भगवन, श्री कुँवर जी भगवन् एवं श्री ब्रजवीर जी भगवन् आदि के निवास स्थान पर पहुँच कर यह अनुभूति हुई।

हरिद्वार में श्री मूलचन्द्र जी एवं श्री ओमपाल जी भगवन का निवास स्थान तो मानो भगवान जी का निवास स्थान हो। प्रभु पिताजी कुटिया में निवास करते थे। कुटिया रूपी भवन में निवास करने के पश्चात मन इतना प्रसन्न हुआ जो कि अवर्णनीय है। भगवान तो भावों के ही प्रेमी हैं, उन्होंने कहा है– 'जो भजते मुझको भाव से मैं उनका ही बन जाता।' और आप सभी भक्तों के भावों को देखकर ऐसा ही प्रतीत हुआ कि भगवान जी का निवास स्थान आप सभी के हृदय कमलों में शोभायमान है एवं प्रभु पिताजी ने हमें यह सौभाग्य प्राप्त कराया।

आज बिजनौर आश्रम से वापस आये दूसरा दिन है। और जरा भी मन नहीं लग रहा है। ऐसा लग रहा है कि कुछ खो गया है, अधूरापन सा लग रहा है। 'आनन्दमय नाम जब मन में है आता, सेवा संयम को संग में है लाता' और आज घर में ऐसा लग रहा– 'आनन्दमय नाम जब मन से है जाता, भोग-योग सम्मुख आ जाता' परन्तु 'तु ही जल में तु ही थल में' तो क्या हो गया अगर मैं बिजनौर आश्रम से इलाहाबाद आ गयी हूँ।

हे परम पिता परमेश्वर! आपकी कृपादृष्टि सदैव मेरे साथ है और अब तो इस मन मन्दिर को ही बिजनौर धाम बनाना है। जब अनुभव लिखने का प्रयत्न किया तो लगा कि कहाँ से शुरु करुँ और अब कलम रुकने का नाम ही नहीं ले रही है। अन्ततः भगवान के चरणों में यही विनती है–

''शरण में आ पड़ा तेरी प्रभु मुझको भुलाना ना, पकड़ लो हाथ अब मेरा नाथ देरी लगाना ना''

भगवन्! अपनी वाणी को विराम देते हुए आप सभी भगवत् भक्तों को प्रणाम। श्री भगवान जी के चरणों में बारम्बार यही मात्र प्रार्थना है कि गुरुवर हमको दीजिए जनम-जनम का साथ जिससे इस मायारूपी संसार में कह सकूँ मेरे तो हैं श्री गुरुदेव हमें किस बात की चिन्ता, शरण में रख दिया सब भार जिन्हें हर बात की चिन्ता। ॐ शान्तिमय

–प्रेम कुमारी, इलाहाबाद

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के जाप से हृदय को सुकून तथा मन को शान्ति मिलती है

ध्यानयोग शिविर के शान्त वातावरण में सचमुच मैं आनन्दमय हो गया था। वहाँ पर हर जगह भगवान की भक्ति तथा भक्तों के प्रेम को देखकर ऐसा लगा कि– हाँ मैं अब शायद सचमुच अपने को पहचान सकूँ। मुझे शिविर में आए हुए गुरुजनों तथा भक्तों से मिलकर इस बात की अनुभूति हुई कि सचमुच शान्ति हमारे अन्दर है।

वास्तव में यह तो मानना पड़ेगा कि ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के जाप से हृदय को सुकून तथा मन को शान्ति मिलती है और इससे मुझे कठिन से कठिन कार्य करने की हिम्मत आती है। कोई भी कार्य करने से पहले अगर आप 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का जाप करते हैं तो यह निश्चित है कि वह कार्य खराब नहीं होगा। भले ही कार्य आपके मुताबिक न हो, पर उसमें भी आनन्दमय प्रभु की कृपा दिखती है। मन की शान्ति को प्राप्त करने की बात मेरे दिल में घर कर गई क्योंकि मुझे इतना पता चल चुका है कि शान्ति, धन-वैभव, सम्पत्ति से नहीं मिलती, पर अगर हम भगवान का स्मरण करते रहे तो शान्ति कभी भी हमें नहीं छोड़ेगी।

वास्तव में मैं कितना भाग्यशाली हूँ कि मुझे इस तरह के ध्यानयोग शिविर और प्रवचन को सुनने का मौका मिला। वरना दुनिया में ऐसे करोड़ो-अरबों मनुष्य हैं जो इससे वंचित रह जाते हैं। इसीलिए मैं पूरी तरह से प्रयास कर रहा हूँ कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस शान्ति सन्देश के बारे में पता चले और वह भी अपनी जिन्दगी में शान्ति को प्राप्त करें। मैं आशा करता हूँ कि यह ध्यानयोग शिविर हर साल लगता रहेगा और हमारा विद्यालय हमें इस शिविर में ले जाता रहेगा। मैं अपने कालेज के निर्देशक एवं शिक्षकों का आभारी रहूँगा, जिन्होंने अपनी तरफ से हमें इस शिविर और आनन्दमय प्रभु पिता से रूबरू कराया।

–गगन यादव और दिलीप पटेल
कक्षा-११ कानपुर

कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से पहले मैं 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का स्मरण करता हूँ जिससे मेरे सभी कार्य निर्विघ्नपूर्ण होते हैं

ध्यानयोग शिविर के शान्त वातावरण में भगवान की भक्ति तथा भक्तों के प्रेम को देखकर मैं सचमुच आनन्दमय हो गया। मैं रोजाना ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप कर अपने आप को सभी बुराइयों से बचा पा रहा हूँ, इस महामंत्र के जाप से मानसिक तथा शारीरिक शान्ति मिलती है एवं रोगों से मुक्ति मिलती है। कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से पहले मैं 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का स्मरण करता हूँ जिससे मेरे सभी कार्य निर्विघ्नपूर्ण होते हैं।

आनन्दमय प्रभु के चरणों में अपना मन समर्पित करके मुझे आन्तरिक शान्ति का अनुभव होता है। मुझे उस शान्त वातावरण में जाकर इस बात का ज्ञान हुआ कि शान्ति, धन, वैभव, सम्पत्ति से नहीं मिलती अपितु हमारे क्रिया कलापों से मिलती है।

वास्तव में मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ कि ऐसे ध्यानयोग शिविर में सम्मिलित हुआ, वरना दुनिया में कई ऐसे लोग हैं जो इस सुनहरे मौके से वंचित रह जाते हैं। मैं पूरा प्रयास कर रहा हूँ कि अधिक से अधिक लोगों को इस शान्ति सन्देश के बारे में पता चले और वह अपने जीवन में शान्ति को प्राप्त करें। मैं आशा करता हूँ कि इस ध्यानयोग शिविर में प्रतिवर्ष पहुँच कर अपनी आत्मा तथा मन की शुद्धि करता रहूँ। मैं अपने शिक्षकों तथा प्रबन्धक महोदय का आभारी हूँ, जिन्होंने हमें इस ध्यानयोग शिविर में ले जाकर आनन्दमय प्रभु पिता के ज्ञान से रुबरु करवाया।

–रावेन्द्र सिंह, कक्षा-११ कानपुर

ध्यानयोग शिविर में जाने से मेरे बहुत से कार्यों में सुधार हुआ है

श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग की कानपुर शाखा द्वारा सोसाइटी धर्मशाला कानपुर में दिनांक १७ अक्टूबर से १९ अक्टूबर तक चले तीन दिवसीय ध्यानयोग शिविर के प्रात:काल सत्र में मैं उपस्थित हुई। ध्यानयोग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे बहुत सुकून भरी अनुभूति हुई। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप करने से मेरे मन को बहुत शान्ति मिली है। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का जाप करने से मेरी पढ़ाई में भी सुधार हुआ है। वरना मैं पहले पढ़ाई करती थी तो मेरा मन टी.वी. व खेल-कूद में ज्यादा लगता था। शान्ति और भक्ति ही ईश्वर को प्राप्त करने के सच्चे मार्ग हैं–

'हे दयासिन्धु भगवान! सम्पूर्ण मनुष्यों की बुद्धि को सत्यव्यवहार में प्रेरित करें'।

पहले मुझे क्रोध बहुत आता था, लेकिन जब से मैं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप करने लगी तो मेरे अन्दर क्रोध की भावना कम हो गई और सबसे प्रेम का व्यवहार करने लगी। ध्यानयोग शिविर में जाने से मेरे बहुत से कार्यों में सुधार हुआ है। जैसे मेरी दिनचर्या में सुधार हुआ है। मैं पहले छुट्टियों में देर तक सोती रहती थी, काम में बहुत जी चुराती थी लेकिन जब से मैं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप करने लगी तो मेरे सारे कार्यों में सुधार हुआ। मैंने अपने पूरे परिवार को मंत्र-जाप करने को कहा है और मेरा पूरा परिवार इसका पालन करता है। इस मंत्र का जाप मैंने बहुत लोगों को बताया है और उन लोगों ने इसे अपनी दिनचर्या में ढाल लिया है, और उनके जीवन में काफी परिवर्तन हुआ है। इस जाप से मेरी माँ को बहुत शान्ति मिलती है और उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। 'बालक वृद्ध युवा नर-नारी, यह मंत्र जाप है सबका हितकारी'। मैं ध्यानयोग शिविर का बहुत आभारी रहूँगी। ॐ शान्तिमय

–निकिता सिंह
कक्षा-९ कानपुर

आश्रम के प्रति जिज्ञासु बुद्धिमानों द्वारा प्रेषित लेखनी को श्रद्धालु भक्तों के हितार्थ यहाँ प्रेषित की जा रही है

(१) मैंने श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ और भाग-२ को ध्यान व रुचि पूर्वक अध्ययन किया जिसके अध्ययन से मेरे संस्कारों में अत्याधिक शुद्धता एवं धार्मिकता आ सकी है। (मंगलौर से प्रेषित)

(२) मुझे श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ प्राप्त हुआ, पढ़कर अति आनन्द प्राप्त हुआ। इसका एक-एक शब्द सराहनीय है। इसके पठन-पाठन से ऐसा प्रतीत होता है कि स्वयं महापुरुष देव सम्मुख बैठकर ज्ञान दे रहे हैं। मैं पूरा यत्न करुँगा कि ऐसे गूढ़ ज्ञान को पूर्णतया धारण करूँ। (दिल्ली से प्रेषित)

(३) श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ प्राप्त हुआ पढ़कर अति प्रसन्नता हुई, कृपया भाग-२ भी भेजिये। मैं जहाँ कहीं जाऊँगा, इस ग्रन्थ के विषय में अन्य लोगों को भी बताऊँगा। इतना सरल-ज्ञान मुझे आज तक किसी पुस्तक में नहीं दिखा। मनुष्य चाहें तो इससे सहज ही ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। (झाँसी से प्रेषित)

(४) आपके आश्रम से प्रकाशित श्री विश्वशान्ति प्रथम भाग देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसे पढ़कर मैं अत्याधिक प्रभावित हुआ हूँ, यह पुस्तक आज के युग में छात्र-छात्राओं के लिये परम-उपयोगी सिद्ध हो सकती है। आपका प्रयास अति प्रशंसनीय है। (राजस्थान से प्रेषित)

''चन्दा-सा शीतल फूलों-सा कोमल सूरज-सा रोशन ऐसा मेरे गुरुजी का ज्ञान''

–शशिप्रभा, इन्दौर

ध्यानयोग शिविर में जाकर मेरा मन भाव-विभोर हो गया

मैं आस्था त्रिवेदी कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा हूँ। श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग की कानपुर शाखा द्वारा सोसाइटी धर्मशाला में हर साल तीन दिवसीय ध्यानयोग शिविर का आयोजन होता है और हर बार की तरह इस बार भी हमारे स्कूल ने उसमें जाने का निर्णय लिया और हम सब वहाँ गये। वहाँ पर जाकर हमें अत्यन्त आनन्द की प्राप्ति हुई। वहाँ पर हमने ध्यान भी लगाया और ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का उच्चारण किया। वहाँ का वातावरण अत्यन्त शान्त था ऐसा लग रहा था कि जैसे स्वर्ग में आ गये हों। वहाँ पर जो गीता जी के श्लोकों का उच्चारण हो रहा था, हमारे कानों को अमृत के समान लग रहा था। वहाँ का वातावरण अत्यन्त सुकून पहुँचा रहा था। ऐसा लग रहा था कि हम साक्षात् स्वर्ग में बैठे हैं। जब मैं अपनी आँखें बन्द करके वहाँ के बारे में सोचती हूँ तो मेरा मन प्रफुल्लित हो जाता है और मुझे ध्यानयोग शिविर में जाने का मन होने लगता है। जो उपदेशक वहाँ पर आये हुए थे उनकी बातें याद आने लगती हैं कि उनकी वो ज्ञान की बातें, ईश्वर के प्रति आस्था। उपदेशकों ने जो बातें जो शिक्षा हमें दी वह हम आज भी और आने वाले समय में भी नहीं भूलेंगे। वहाँ पर हमने बहुत-सी ज्ञान की बातें सीखीं। वहाँ पर जाकर मेरा मन भाव-विभोर हो गया। वहाँ का वातावरण मैं कभी भी नहीं भूल पाऊँगी। ऐसे शान्त वातावरण में ध्यान लगा करके मेरा मन अत्यन्त प्रफुल्लित था। वहाँ के वातावरण की मैं जितनी प्रशंसा करूँ, कम है। तत्पश्चात् हमें प्रसाद दिया गया जो अमृत के समान था। मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि अगले साल भी हमें वहाँ जाने का सौभाग्य प्राप्त होगा। अन्तत: मैं यह कहना चाहती हूँ कि वहाँ पर जाकर मेरी आत्मा अत्यन्त प्रसन्न है।

–आस्था त्रिवेदी
कक्षा-११ कानपुर

मैं अपनी सारी परेशानियों, दुविधाओं से मुक्त हो गई

सर्वप्रथम मैं आपको यह बताना जरूरी समझती हूँ कि मैं एक मुस्लिम परिवार की लड़की हूँ। और मैं इसके पूर्व किसी आश्रम या मन्दिर में नहीं गई हूँ। मैं पहली बार श्री विश्वशान्ति आश्रम के ध्यानयोग शिविर में गई और मुझे वहाँ अद्‌भुत शान्ति, चैन प्राप्त हुआ। वहाँ मुझे एक किरण एक रोशनी नजर आई मानों मैंने अपने जीवन में नई आशा को देख लिया हो। मैं अपनी सारी परेशानियों, दुविधाओं से मुक्त हो गई। मुझे कोई चिन्ता नहीं और मुझे घर वापस जाने की भी चिन्ता नहीं थी। यदि हम कही घूमने या किसी के घर जाते हैं तो, कुछ देर बाद ये लगने लगता है कि कितनी देर हो गई है घर जाना चाहिए। ऐसी जो चिन्ताएँ होती हैं मानो वे मेरे मस्तिष्क में थी ही नहीं। मैं उनसे बहुत परे थी और होना भी चाहिए क्योंकि वह प्रभु का घर है। वहाँ ईश्वर स्वयं निवास करते हैं। ईश्वर हो या अल्लाह सब एक ही है। हम सब उन्हीं के भक्त हैं। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र ने मेरे जीवन में डूबते को तिनके का सहारा जैसे काम किया है। यह मंत्र मेरे लिए बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ। वहाँ जाकर मेरी जो शारीरिक पीड़ा थी वह मानो नष्ट हो गई और वहाँ बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। वह स्थान मुझे बहुत ज्यादा स्वच्छ व सुन्दर व आकर्षक लगा। मानो वह स्थान हमें बार-बार अपने पास बुला रहा हो। ऐसा लग रहा था मानो ईश्वर स्वयं हमें अपने पास बुला रहे हो। मेरी यह इच्छा है कि मैं वहाँ रोज जाऊँ और प्रभु के दर्शन करूँ मैं अपने परिवार के लोगों को भी वहाँ जाने के लिए प्रेरित करती हूँ और वे भी मुझसे सहमत है। मेरी दिनचर्या में भी काफी सुधार हुआ है। मुझे अपना अनुभव बताने में बहुत खुशी हो रही है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के ध्यानयोग शिविर में मैं हमेशा जाना चाहूँगी। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे सारे कष्टों का एकमात्र निवारण यहीं है। ॐ शान्तिमय

–फरहीन
कक्षा-११, कानपुर

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र से मन को शान्ति, तन को ऊर्जा तथा दिल को सुकून प्राप्त होता है

दुनिया में सबसे अधिक धार्मिक, भजन-चिन्तन करने वाला, पूजा-पाठ करने वाला हिन्दू ही है परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि धर्म के प्रति इतना आस्थावान हिन्दू, जीवन के अन्तिम समय तक यह निश्चय नहीं कर पाता कि हमारा इष्ट कौन है? हमारे ही परिवार को देखा जाये तो कोई हनुमान का भक्त है तो कोई शिव जी का, कोई देवी का तो कोई अन्य देवता का यह सब देखकर मेरा मन चिन्तित रहता था कि एक दिन मुझे स्कूल की तरफ से ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ध्यानयोग शिविर में जाने का अवसर मिला। हम प्रात:कालीन स्कूल से बस से रवाना हो गये। मन में अनेकों विचार आने लगे थे कि क्या होगा, वहाँ जाकर कैसा लगेगा? परन्तु जैसी ही मैं बस से उतरी और शिविर में पहुँची जहाँ पर सभी ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का गान कर रहे थे मैंने देखा कि वहाँ हर उम्र के लोग थे। फिर सब अपना अनुभव बताने लगे। पहले मुझे कुछ अजीब लगा फिर उन्होंने जब आँखें बन्द करके ध्यान लगाने को कहा तो मैंने ध्यान लगाया फिर आँखें खोली तो एक ऊर्जा महसूस हुई मैंने घर आकर रोज ध्यान लगाना शुरु किया। शरीर को ऊर्जा मिलती रही एक अपना सा एहसास प्राप्त हुआ, मन स्थिर हो गया। पढ़ाई में मन लगने लगा। मैंने ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जाप शुरु कर दिया फिर देखा कि परिणाम अच्छे आने लगे और सभी मुसीबतों का हल बस ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप करने से आसानी से मिल जाते हैं तथा मैंने अपने घर वालों को भी सलाह दी तो उन्होंने भी इस मंत्र का जाप किया तथा भिन्न-भिन्न समस्याओं का समाधान मिल गया और मेरा पूरा परिवार हर रविवार को यहाँ आकर अपना कुछ समय व्यतीत करता है और यहाँ आकर मन को शान्ति, तन को ऊर्जा तथा एक सुकून प्राप्त होता है। मैं यहाँ आकर तो अपने आपको धन्य मानती हूँ और ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र ने तो मुझे एक ऊर्जा और एक दिली सुकून दिया है।

–श्वेता वर्मा,कक्षा-१० कानपुर

ध्यानयोग शिविर में मुझे ऐसी अनुभूति हो रही थी कि मानो मुझे साक्षात् रूप में ईश्वर के दर्शन मिल गये हो

यह मेरे जीवन का द्वितीय ध्यानयोग शिविर है। ध्यानयोग शिविर में मुझे ऐसी अनुभूति हो रही थी कि मानो मुझे साक्षात् रूप में ईश्वर के दर्शन मिल गये हो। जिस प्रकार आप जानते होंगे कि 'ॐ' शब्द अमर है। आनन्दमय कहते ही मानो हमारे हृदय में आनन्द आ गया हो और शान्तिमय कहते ही हमारे हृदय में अत्यन्त शांति की अनुभूति हुई। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र के जाप से मन की एकाग्रता बढ़ती है। विद्यार्थी जीवन में मन की एकाग्रता का होना अति आवश्यक है। योग शिविर के दौरान जब पता चला कि हम इस मंत्र का जाप हर पल, हर समय कर सकते हैं तो मुझे बहुत खुशी हुई। योग साधना करने से शान्ति और आनन्द मिलता है, अन्त:करण पवित्र होता है। मुझे पहली बार ऐसा प्रतीत हुआ कि मनुष्य का जीवन केवल ईर्ष्या, नफरत, क्रोध, राग-द्वेष, भय, रुदन, कामना, कलह-क्लेश आदि के लिए ही नहीं मिला है बल्कि शान्ति, दया, प्रेम आदि के लिए है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जाप कर कोई भी मन को एकाग्र कर सकता है। मैं यहाँ विद्यालय की तरफ से नहीं तो अपनी तरफ से आने की पूर्ण कोशिश करुँगी। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ऐसा दिव्य महामंत्र है जिसका जाप कोई भी, कभी भी कर सकता है और इसके दिव्य लाभों को प्राप्त कर सकता है।

–श्वेता चन्द्रा
कक्षा-१० कानपुर

जब कभी आँखें बन्द करके ध्यानयोग शिविर में दिये गये ज्ञान के बारे में सोचती हूँ तब मेरा मन आनन्दमय हो जाता है

हे प्रभु! आपके चरणों में मेरा वन्दन शत्-शत् अभिनन्दन! आपसे मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि हम आपके द्वारा भेजे गये आपके दूतों से साक्षात् मिले। जिन्होंने मुझे आपसे मिलाया। हे प्रभु! इस शिविर में तो आपकी सिर्फ हल्की-सी झलक मिली उससे ये भौतिक सुख, सुख नहीं बल्कि दु:ख लगने लगे। आपके चरणों में रहने के लिये मन व्याकुल हो उठेगा। जैसा मुझे उस क्षण हल्का-सा महसूस हुआ था। जब मैं अपने विद्यालय की ओर से श्री विश्वशान्ति आश्रम के ध्यानयोग शिविर में गयी थी। शिविर में जाते ही ऐसा लगा कि मैं किसी शान्तिपूर्वक वाली दूसरी दुनिया में आ गयी हूँ। वहाँ का माहौल बहुत अच्छा था। वहाँ के वातावरण में शान्ति थी। जब कभी आँखें बन्द करके वहाँ के विषय में सोचती हूँ तब मेरा मन आनन्दमय हो जाता है।

शिविर में गूँजती हुई वह मधुर ध्वनि! मानो कि हम देवलोक में आ गये हैं। वह लय, वह ताल, वह ध्वनि, वह मंत्र जब भी मेरे मन में गूँजती है तब मेरा मन भाव-विभोर हो जाता है। मेरा मन एवं मेरी आत्मा बहुत ऊपर उठ चुके हैं। और मेरी आत्मा, परमात्मा से बस मिलने ही जा रही थी। वे गीता जी के श्लोक पूर्ण स्वर एवं लय के साथ जब भी गूँजती थी तो बस दिल बाग-बाग हो जाता था और यह संसार झूठा, बेकार एवं तुच्छ लगने लगता था। उस परमात्मा के समक्ष ये सभी भौतिक सुख तुच्छ है। वहाँ पर जब हमें ध्यानयोग कराया गया तो वह क्षण इतना ज्यादा अच्छा लगा कि उसको वर्णन करने के लिये मेरे पास शब्द ही नहीं है। जिस प्रकार कोई गूँगा व्यक्ति किसी बहुत अच्छे व्यंजन के स्वाद को बयान नहीं कर सकता। तत्पश्चात् वहाँ पर हमें प्रसाद दिया गया जिसको हमने ग्रहण किया। अंतत: वहाँ के बड़े-बड़े विद्वानों ने जो बातें, जो शिक्षा हमें दी वह हम आज भी और आने वाले समय में भी नहीं भूलेंगे। ॐ शान्तिमय

–बरखा सिंह
कक्षा-११ कानपुर

इस ध्यानयोग शिविर के वातावरण में आकर बहुत आनन्द प्राप्त हुआ

श्री गुरु जी के चरणों में मेरा सादर प्रणाम, गुरु जी मुझे आपके इस ध्यानयोग शिविर के वातावरण में आकर बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। जो कि मैं बताना चाहती हूँ। मैं जब शिविर में आयी तो मुझे ऐसा लगा मानों मैं इस संसार की मोह-माया को त्याग कर कही ज्ञान प्राप्त करने आयी हूँ। योग शिविर में सर्वप्रथम तो मैंने गुरु चरणों की वन्दना की। तत्पश्चात् मैं इस संसार की मूल भावना से प्रेरित हुई। इसी क्रम में आपने हमें ज्ञान के मोती दिये। अब मैं अपने विचार आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ जो कि निम्न प्रकार है–

* ''प्रारम्भ में लक्ष्य बहुत ऊँचे न बनाये''। जैसे– जैसे लक्ष्य में सफलता मिलती रहेगी मनोबल बढ़ता रहेगा और ऊँचे लक्ष्य भी प्राप्त होंगे।

* ज्ञान प्राप्त करने के लिए जिज्ञासा पैदा कीजिए। इससे आपके अन्दर ज्ञान प्राप्त करने की भूख बढ़ेगी।

* पहले की असफलता की चिंता न करें। आपका भविष्य उज्जवल है।

* पढ़ाई को खेल समझकर इसमें आनन्द लें। इसे मनोरंजन समझे, सीखने के लिए गम्भीरता की नहीं खेल की भावना आवश्यक है।

अत: मुझे आपके इस दिव्य महायोग संगम में आकर संसार में उचित तरह चलने का मार्ग प्राप्त हुआ। ॐ शान्तिमय!

–अमीषा जायसवाल
कक्षा-९ कानपुर

इस मंत्र का जाप करने से हमारी एकाग्रता बढ़ती है

मुझे श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग की कानपुर शाखा द्वारा सोसाइटी धर्मशाला में चले तीन दिवसीय प्रात:कालीन, ध्यानयोग शिविर के दिव्य वातावरण में जो दिव्य अनुभूति हुई उसका वर्णन करना मेरे द्वारा एक अविस्मरणीय है। मुझे ध्यानयोग शिविर के माध्यम से जो मानसिक ज्ञान व ध्यान तीन दिवसीय कार्यक्रम के तहत मिला उससे मुझे मानसिक सुकून व शान्ति की अनुभूति प्राप्त हुई। शरीर स्वस्थ्य रहने के लिए योग द्वारा जो उपाय ध्यानयोग शिविर में बताए गए उन योगों द्वारा हमारा शरीर स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट रहेगा। हमारे देश में योग द्वारा शरीर को स्वस्थ रखने के उपाय की विधि तो प्राचीन है। पुराने समय में विज्ञान का विकास इतना नहीं था। डॉक्टरों द्वारा इलाज इतना नहीं था, योग द्वारा ही शरीर को स्वस्थ व सुन्दर बनाया जाता था।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र के जाप से हमारे मन में शान्ति और आनन्द का अनुभव हुआ। इस मंत्र का जाप करने से हमारी एकाग्रता बढ़ती है। हमारे ज्ञान-चच्छु खुलते हैं, हमारे सम्पूर्ण शरीर में स्फूर्ति एवं चेतनता उत्पन्न होती है। हम अपने आपको तरोताजा और ऊर्जावान महसूस करते हैं। मैंने भी वहाँ जाकर ऐसा ही अनुभव किया। सभी लोगों को अपनी मानसिक व शारीरिक शक्ति का विकास करने के लिए ध्यानयोग अवश्य करना चाहिए। ॐ शान्तिमय

–श्रिया

कक्षा-९ कानपुर

भला भगवान को भगवान पर कैसे चढ़ाऊ मैं

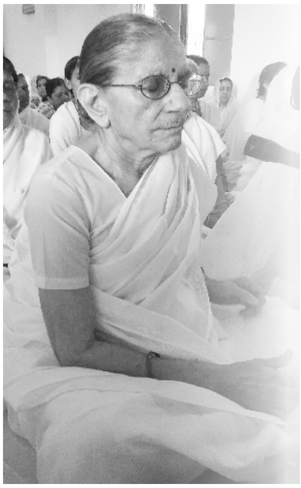

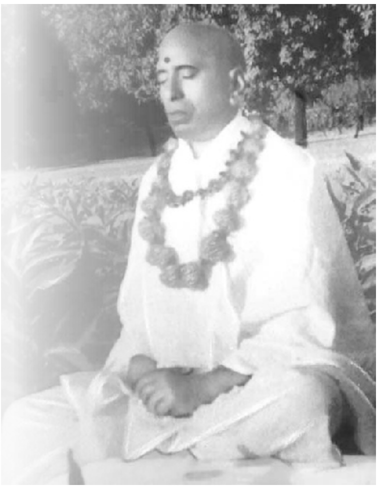

तुम ही मूर्ति में, तुम ही व्यापक हर फूलों में,
भला भगवान को भगवान पर कैसे चढ़ाऊ मैं।
ॐ आनन्दमय ॐ आनन्दमय
लगाना भोग का, भगवान इक अपमान करना है
खिलाता है जो सब जग को, उसे कैसे खिलाऊ मैं,
आनन्दमय ....
है जिसकी ज्योति से रोशन, सूरज चन्द्रमा तारे,
बड़ा अन्धेर है स्वामी, अगर दीपक दिखाऊँ मैं।
आनन्दमय ....
बड़ा हैरान हूँ स्वामी, तुझे कैसे रिझाऊँ मैं,
कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊँ मैं।
आनन्दमय ....
अहंता ममता को अपने प्रभु को अर्पण कर दूँ मैं।
काम क्रोध को अपने प्रभु को अर्पण कर दूँ मैं।
ॐ आनन्दमय भगवान को मन में बसाऊँ मैं।
आनन्दमय ....

–सुश्री आनन्द लता जी आनन्दमय

ध्यानयोग शिविर का अनुभव मेरे लिए कुछ अलग-सा था

जब मैं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ध्यानयोग शिविर में गई तो वहाँ का अनुभव मेरे लिए कुछ अलग-सा था। वहाँ इतनी आनन्द और शान्ति का अनुभव हो रहा था एवं ध्यान करते समय अत्यंत आनन्द की अनुभूति हुई। वहाँ पर जो भी बातें बताई गई वह बहुत अच्छी व महत्त्वपूर्ण थी। वहाँ का वातावरण बहुत अच्छा लगा और वहाँ बहुत शान्ति मिल रही थी।

जब हम लोगों को ध्यानयोग का अभ्यास कराया जा रहा था और उसके बारे में बताया जा रहा था तो ऐसा लग रहा था कि जैसे हम मन्दिर में बैठकर ईश्वर की पूजा कर रहे हों एवं ईश्वर के ध्यान में बिल्कुल लीन हो गये। ध्यानयोग के बाद हमें कुछ बातें बताई गई जो हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थी। वहाँ के वातावरण जैसा सुखद अनुभव मुझे आज तक नहीं हुआ। ध्यानयोग में हम लोग बिल्कुल ईश्वर के अधीन थे।

वहाँ पर हम सब लोगों को बताया गया कि अगर कोई चिन्ता या परेशानी हो तो हम ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप करेंगे तो हमारी चिन्ता और परेशानी दूर हो जायेगी और यह जाप हमें मानसिक रूप से सहायता करेगा।

–हुस्ना बानो
कक्षा-९, कानपुर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं श्री विश्वशान्ति आश्रम के कानपुर ध्यानयोग शिविर में उपस्थित हुआ और वहाँ से प्राप्त श्री ग्रन्थ को पढ़ा उसमें जो वाक्य सबसे अच्छा लगा नीचे लिख रहा हूँ–

हे श्री आनन्दमय भगवान! श्रेष्ठता के अहंकार की रक्षा-वृद्धि करने वाले प्रेम के श्रद्धालु और इन्द्रियों के सुख को भोगने वाले प्रेम के श्रद्धावान नारी-नर १२५ दिमागी अग्नियों के दण्ड से उबलते रहते हैं।

''सकल पदार्थ है जग माहीं, श्री प्रभु मर्यादाहीन नर पावत नाहीं''

हे प्यारे प्रेमियों! मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम रूप को मत भूलो, मुझे सर्वत्र सब रूपों में और अपने हृदय (दिमाग) में मानों। यहीं महामंत्र जाली ममता-प्रेम सहित, डाकू अहंकार का विनाश करने वाला प्रभावशाली बम-गोला है और यही योगसिद्ध महामंत्र आत्मबल वर्द्धक ध्यान अमृत का स्रोत है।

हे श्री आनन्दमय भगवान्! बड़प्पन के अभिमान की और ममता की रक्षा वृद्धि कराने वाली स्वार्थी बुद्धि १२५ मानसिक अग्नियाँ प्रज्वलित करने वाली वैरिन है।

''संयम, सेवा, स्मरण, सादगी, ध्यान योगी का ध्यान;
पाँचों से अतिशीघ्र हो आनन्द पद का ज्ञान।''

हे श्री न्यायकारी भगवान्! मैं राज विधान के विरुद्ध दम्भ-पाखण्ड, झूठ-कपट, चोरी, ब्लैक, रिश्वत, सट्टा, जुआ आदि हिंसा जनक पापमय धोखेपूर्ण तामसी कर्मों द्वारा धन उपार्जन करने का सर्वथा त्याग करुँगा।

–अविनाश सिंह, कक्षा-९ कानपुर

भक्ति का ईश्वर से अन्तर्मन का नाता है

ध्यानयोग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे यह अनुभूति हुई कि इस संसार में ईश्वर ही एक ऐसी शक्ति है जो हमारे जीवन को पूर्ण करती है। मानव को सदैव कर्म का अवलम्बन कर भक्ति करनी चाहिए, ईश्वर की भक्ति करने से ही मन को शान्ति मिलती है। और जब हमारे मन में शान्ति होगी तो हम दूसरों को भी शान्ति प्रदान कर सकते हैं ''जिस दिन आपको पता चलेगा कि नेकी करने से मन को शान्ति मिलती है तो आप बुरे काम करना छोड़ देगें।''

भक्ति का ईश्वर से अन्तर्मन का नाता है, वह हमारा माता-पिता, गुरु और मित्र है। भक्ति के द्वार सभी के लिए खुले होते हैं। पिता की गोद में पहुँचने के लिए केवल भाव की आवश्यकता होती है न कि पुण्य की और न ज्ञान की। इसी प्रकार हमें ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए। 'जितना मोह आपको इस नश्वर शरीर से है यदि इतना मोह ईश्वर से होता तो आपका कल्याण हो जाता।'

दुनिया को जीतना चाहते हो, तो पहले अपने आपको जीतो।

'श्रम और विश्राम', 'विश्राम और श्रम' यही जीवन रथ के दो चक्र हैं। बस! यही शान्ति का उपाय है। ॐ शान्तिमय

–दुर्गेश यादव, कक्षा-९ कानपुर

ज्ञान-गंगा

मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य

सच्ची प्रेम भक्ति का स्वरूप क्या है?

सदा-सर्वदा हर परिस्थिति में सम-शान्त प्रसन्न रहने का नाम ही सच्ची प्रेम भक्ति है। श्री गीता में ११ वें अध्याय के ५५ वें श्लोक में भक्ति का स्वरूप अनन्य बताया एवं १२वें अध्याय के १३वें श्लोक से १९वें श्लोकों तक भक्ति को गुणों के स्वरूपों से समझाया और अपने प्रिय भक्तों के लक्षण बताये। गुणों को धारण करना ही भक्ति है। पुनः १३वें अध्याय के श्लोक १० में भक्ति का स्वरूप अव्यभिचारिणी बताकर ज्ञान की प्राप्ति वाले साधनों में मुख्य स्थान देकर एकान्त देश में रहने का आदेश दिया। श्री गीता के १८वें अध्याय के ५७वें श्लोक में भगवान ने स्पष्ट रूप से भक्ति सहित निष्काम कर्मयोग के अनुष्ठान करने की आज्ञा दी एवं समस्त संकटों से अनायास पार कर जाने की घोषणा करते हुये, उद्धार हो जाने की बात कहकर, इस प्रकार अनुष्ठान न करने से परमार्थ से नष्ट-भ्रष्ट होने की चेतावनी भी दी।

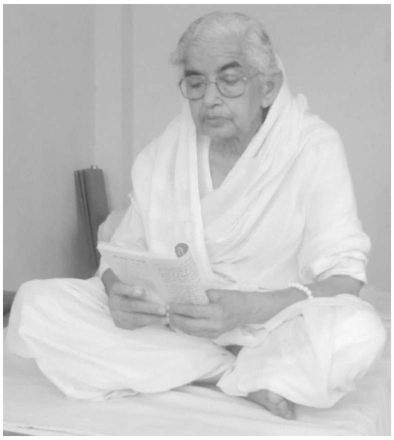

जिस प्रकार सूर्य के पास किसी प्रकार से अन्धकार नहीं जा सकता उसी तरह सच्चे भक्त के पास अन्धकार रूपी राग-द्वेष, काम-क्रोध, स्वार्थ-अहंकार आदि दुर्गुण-दुराचार नहीं जा सकते। परिस्थिति जीवन में तीन प्रकार की आती हैं। अनिच्छा, परेच्छा, स्व-इच्छा।

(१) अनिच्छा से आने वाली परिस्थिति भगवान की इच्छा से आती है। सावधान करने के लिए, चेतावनी देने के लिए!

(२) परेच्छा से आने वाली परिस्थिति ॐ आनन्दमय भगवान की करवाई हुई होती है। इसके द्वारा हमें सजग करने के लिए, उत्साहित करने के लिए होती है।

(३) स्व-इच्छा वाली परिस्थिति अपने द्वारा पैदा की हुई होती है। उसको भगवत-विधान अनुसार करने की आज्ञा है! श्री गीता अ० २ श्लोक ६१, श्री गीता अ०३ श्लोक ३०-३२! इसी प्रकार प्रायः समस्त अध्यायों में भगवत्-विधान अनुसार ही अपने समस्त कर्मों को ही अनुष्ठान करने की आज्ञा दी है। फिर तो अपना कल्याण हुआ ही पड़ा है। फिर हमारे कल्याण में विलम्ब नहीं है। हमें संसार का आश्रय त्यागकर ॐ आनन्दमय भगवान की शरण में रहना चाहिए, भगवान पर निर्भर रहना चाहिए। ॐ आनन्दमय भगवान के तत्त्व रहस्य को समझना चाहिए। ॐ आनन्दमय भगवान पर निर्भर होने से ही भगवान का तत्त्व-रहस्य समझ में आ सकता है।

मानव जीवन देव दुर्लभ जीवन है। यह भगवान की विशेष दया-दृष्टि से मिला है। इसके एक-एक क्षण की कीमत संसार के किसी भी पदार्थ से तौली नहीं जा सकती। जीवन के समय की रफ्तार तेजी से भाग रही है। परन्तु मानव ने भविष्य में आने वाले महान दुःखों की शिलाओं से बचने के लिए अपनी किसी प्रकार की सुरक्षा का साधन नहीं कर रखा है, जो कुछ है भ्रम से किया है। वह भगवत विधान के अनुष्ठान से रहित है, क्योंकि जीवन में यदि राग-द्वेष की, मोह-ममता की, स्वार्थ-अहंकार की, काम-क्रोध की, भोग-दर्शन, दोष-दर्शन की तरंगे उठती हैं, आवेश-जोश का चक्कर आता है। यह खतरे का चिन्ह है। गीता में काम-क्रोध के वेग को सहन करने वाले की प्रशंसा करते हुए उसी को सुखी और नर बताया है। शेष सभी दुःखी हैं और पशु हैं!

इसलिए परम-पवित्र, परम शुद्ध, निर्मल, सम-शान्त बनाने वाला योगसिद्ध महामन्त्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का निरन्तर जपने का अभ्यास करना और ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान के स्वरूप का चिन्तन करते हुए अपने-अपने सभी स्वाभाविक कर्मों को करते रहने के अभ्यास से एवं सत्संग-भजन, कीर्तन, ध्यान करते रहने से अन्तःकरण पवित्र, निर्मल, शुद्ध होकर प्रभु पिता के विधान तत्व-रहस्य का ज्ञान हो जाता है जिससे सदा-सर्वदा आनन्द-शान्तिदायक भगवत प्रेम, प्रसन्नता, शान्ति की मग्नता बनी रहती है। बुद्धि एकनिष्ठ, स्थिर अचल और स्थिर हो जाती है। यही मनुष्य जीवन प्राप्त होने का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। ॐ शान्तिमय

सेवायोग का तत्त्व

(सेवा करते हुए ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के परम् पद की प्राप्ति)

हम लोगों को प्रात:-सायं दोनों समय नियमित रूप से ॐ आनन्दमय प्रभु की उपासना अवश्य ही करनी चाहिए, क्योंकि प्रात:काल की उपासना प्रेमपूर्वक करने पर ॐ आनन्दमय प्रभु की कृपा से दिन भर उनकी स्मृति रह सकती है। स्मृति को तैलधारा की तरह अखण्ड बनाये रखने के लिए हमें चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते तथा प्रत्येक कार्य करते हुए ॐ आनन्दमय भगवान को अपने साथ समझना चाहिए। मन में सदा-सर्वदा यह निश्चय रखना चाहिए कि हम जो कुछ करते हैं उसे ॐ आनन्दमय भगवान ही करवाते हैं। गुरु जिस प्रकार बच्चे का हाथ पकड़कर उससे अक्षर लिखवाते हैं, उसी प्रकार ॐ आनन्दमय प्रभु हमें प्रेरित करके समस्त कार्यों का आचरण हमसे करवाते हैं। कठपुतली जिस प्रकार सूत्रधार के इशारे पर नाचती है, उसी प्रकार हमें ॐ आनन्दमय भगवान के हाथ में अपनी बागडोर सम्हलाकर उनके इशारे पर सेवा करनी चाहिए। इस प्रकार के अभ्यास से हमें प्रत्यक्ष में शान्ति का अनुभव होने लगेगा और हमारे इस साधन से ॐ आनन्दमय प्रभु विशेष प्रसन्न होंगे। इसी प्रकार सायंकाल की उपासना प्रेमपूर्वक करने पर भगवत् कृपा से रात्रि में और सोने के समय भी ॐ आनन्दमय भगवान की स्मृति रह सकती है। उससे दु:स्वप्नों का नाश होकर वृत्तियाँ सात्त्विक हो जाती हैं और निरन्तर प्रसन्नता तथा शान्ति रहती है। इसलिए हमें अपने मस्तक पर ॐ आनन्दमय प्रभु का हाथ समझकर सदा आनन्दित रहना चाहिए और भोग, आराम, पाप, प्रमाद तथा आलस्य आदि को मृत्यु के समान समझकर अपने जीवन के क्षणों का उपयोग उत्तम से उत्तम सेवा कार्यों में ही करना चाहिए। ॐ आनन्दमय भगवान के नाम का जप और गुण तथा प्रभाव के सहित उनके स्वरूप का ध्यान करते हुए ही उनकी आज्ञानुसार तत्परता के साथ सेवा करनी चाहिए।

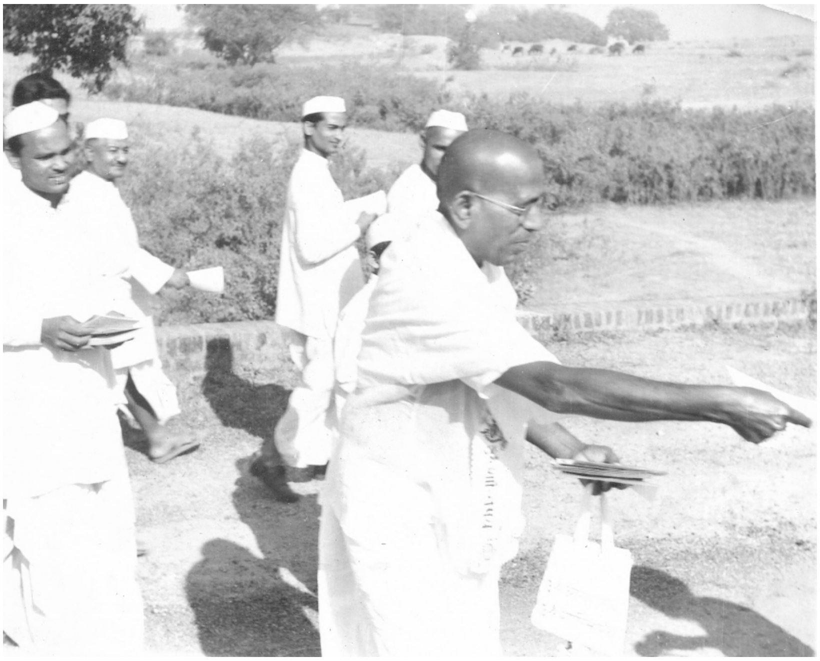

परन्तु इस साधना में निम्नलिखित बातें अत्यन्त बाधक हैं– क्रोध, वैमनस्य, ईर्ष्या, भय, शोक, मोह, अभिमान, मनोमालिन्य, राग-द्वेष और घृणा आदि। इन विघ्नों को मृत्यु के समान समझते हुए इनका सर्वथा परित्याग कर देना ही उचित है। इनसे छुटकारा पाने का मुख्य उपाय है– ॐ आनन्दमय प्रभु की शरण। शरणागति का विधि-विधान श्री गीता के ५२ श्लोकों में प्रकाशित है– जिनका विवरण श्री विश्वशान्ति भाग (२) के पृष्ठ सं० १५४-१५५ पर दिया है तथा श्री विश्वशान्ति भाग (१) में आदि से अंत तक प्रकाशित है। इस शरणागति का यदि पूर्णतया पालन कर लिया जाय तो उपर्युक्त विघ्नों से सहज ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है– इसमें संदेह ही क्या है, किन्तु परेच्छा और अनिच्छा से जो कुछ भी प्राप्त हो उसे ॐ आनन्दमय प्रभु का भेजा हुआ पुरस्कार मानकर प्रसन्न होने से भी इन विघ्नों से छुटकारा हो सकता है। मन के प्रतिकूल जो कार्य होता है उसे ॐ आनन्दमय भगवान की इच्छा से होने वाला मान लें तो तुरन्त ऊपर लिखे विघ्न नष्ट हो सकते हैं। यदि कोई सेवा हमारे मन के प्रतिकूल हो तो हमें समझना चाहिए कि इसमें निश्चय ही ॐ आनन्दमय भगवान का हाथ है। यह उनकी हम पर बड़ी भारी दया हो रही है कि वे सब कुछ जानते हुए भी आज हमारे हित के लिए परीक्षा ले रहे हैं। अब हमें सावधान रहना चाहिए कि कहीं हम उस परीक्षा में अनुत्तीर्ण न हो जायें। इस प्रकार जो उस स्थल पर भी आनन्द का ही अनुभव करता है वही वास्तविक भक्त है। ॐ आनन्दमय भगवान के प्रत्येक विधान

में प्रसन्न रहना ही तो भक्त का परम कर्त्तव्य है। अत: ॐ आनन्दमय भगवान का भक्त बनने की इच्छा वालों को चाहिए कि वे उनके प्रत्येक विधान में प्रसन्न रहें। ॐ आनन्दमय भगवान हमें पापों से मुक्त करके विशुद्ध बनाने तथा सहनशील तथा धैर्यवान् होने के लिए हमारे मन के प्रतिकूल पदार्थ भेजकर हमें चेतावनी दिया करते हैं।

बाढ़, भूकम्प, महामारी और दुर्भिक्ष आदि अनिच्छा से जो होने वाले अनिष्ट ॐ आनन्दमय भगवान के द्वारा ही भेजे हुए होते हैं। मनुष्यों तथा पशु-पक्षियों आदि द्वारा परेच्छा से जो अनिष्ट होते हैं, उनमें भी ॐ आनन्दमय भगवान् की ही प्रेरणा समझनी चाहिए। यह समझकर हमें उन विपरीत परिस्थितियों में भी इतना आनन्द होना चाहिए, जितना कि एक दरिद्र पुरुष को पारस के प्राप्त होने पर होता है।

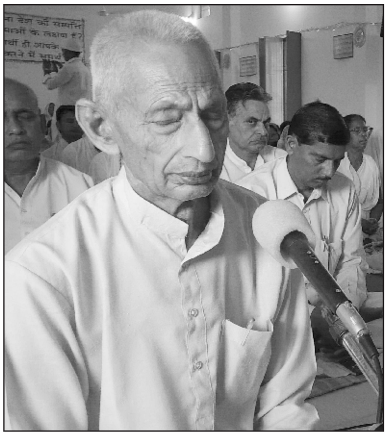

निन्दा और अपमान हमको जिस दिन अच्छे मालूम होने लगेंगे, उस दिन समझना चाहिए की हम ॐ आनन्दमय भगवान् के संनिकट पहुँच रहे हैं। वर्तमान स्थित से वह स्थिति बिल्कुल विपरीत होगी। जो मान और स्तुति आज हमको अमृत के समान मधुर लगते हैं, वे ही ॐ आनन्दमय भगवान के शरणापन्न होने पर विष के समान लगने लगेंगे। जिस प्रकार स्तुति सुनकर हमारे हृदय में प्रसन्नता की लहर उठती है, उसी प्रकार जब निन्दा सुनकर भी हमारे हृदय की वही स्थिति बनी रहेगी, हमारे हृदय में स्तुति सुनने के समान ही प्रसन्नता की लहर उठेगी, तब समझना चाहिए की हम ॐ आनन्दमय भगवान के समीप आ गये हैं। आज पुष्पमाला पहनकर हम जिस हर्ष का अनुभव करते हैं, ठीक उसी हर्ष की अनुभूति तब हमें जूतों से तिरस्कृत होने पर भी होगी।

हमें चाहिए कि हम उन पुरुषों को, जो हमारी निन्दा करते हैं, उसी भाव से देखें जिस भाव से हम अपनी प्रशंसा करने वाले को देखते हैं। निन्दक पुरुष को अपनी कुटिया देकर अपने पास बसाना चाहिए।

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी बिन साबुन, निर्मल करे सुभाय।।

कहने का तात्पर्य यह है कि जिस किसी भी प्रकार से हो अपनी निन्दा करने वाले को अधिक से अधिक अपने सम्पर्क में रखा जाये, क्योंकि वह हमारे जिस कार्य की निन्दा करेगा उसे सुधारने की चेष्टा हमारे द्वारा अवश्य होगी। मनुष्य को अपने दोष शीघ्र दिखलाई नहीं पड़ते, परन्तु किसी के द्वारा अपने दोषों के लिए चेतावनी दिये जाने पर सात्त्विक उन्नति कामी पुरुष उन दोषों को दूर करने की चेष्टा करता है। अतएव हमें प्रसन्नता पूर्वक अपनी निन्दा सुनने का स्वभाव बनाना चाहिए। ऐसा स्वभाव बना लेने पर हमारे द्वारा होने वाले निन्दनीय कार्यों का तथा निन्दा श्रवण से उत्पन्न होने वाले हमारे अन्त:करण के विकारों का विनाश हो सकता है।

ॐ आनन्दमय भगवान् अपने भक्तों के सम्मुख उनके हित के लिए इस प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियाँ पैदा करते हैं। उन विपरीत विधानों के प्राप्त हो जाने पर भी जो जरा भी उद्विग्न न हो, उन्हें ॐ आनन्दमय भगवान के भेजे हुए पुरस्कार समझकर उनमें सदा सन्तुष्ट रहते हैं, वे ही सच्चे भक्त हैं। इसके विपरीत यदि हम उनके विधान में आनन्द नहीं मानते, उनकी प्रसन्नता में प्रसन्न नहीं होते तो हम ॐ आनन्दमय भगवान के भक्त कहाँ? इसलिए इन सब विपरीत विधानों में भी हमें हर्ष होना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से हमारे पूर्वकृत पापों का नाश होता है, आत्मबल और सहनशक्ति की वृद्धि होती है और साथ ही साथ भगवत्स्मृति होकर शास्त्र विपरीत कर्मों का होना रुक जाता है तथा शत्रु मित्र बन जाता है और विष अमृत के रूप में परिणत हो जाता है।

इसलिये हम लोगों को भी अपने मन के प्रतिकूल जो कुछ भी हो, उसे ॐ आनन्दमय भगवान का विधान समझकर हर समय सन्तुष्ट रहना चाहिए, क्योंकि उन आनन्दमय परमात्मा की प्रेरणा के बिना वृक्ष का एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। अतएव चाहे हमारा कोई कितना ही अनिष्ट क्यों न करे, हमें उसको ॐ आनन्दमय भगवान की प्रेरणा जानकर उससे प्रेम ही करना चाहिए। उसके प्रति आदरबुद्धि ही रखनी चाहिए। यह भी ॐ आनन्दमय प्रभु की शरणागति का तत्त्व है। अपने से प्रेम करने वाले के साथ तो पशु भी प्रेम करते हैं। कुत्ते, गधे आदि सभी इसके प्रमाण हैं। देखा जाता है कि एक जब दूसरे से प्रेम करता है तो दूसरा भी उससे प्रेम करता है। जब एक कुत्ता दूसरे को चाटता है तो दूसरा भी उसको चाटता है। इसी प्रकार वैर के विषय में भी समझ लेना चाहिए। यदि हम लोग भी अपने से प्रेम करने वाले के साथ प्रेम और अपने से द्वेष रखने वालों

के साथ द्वेष करें तो फिर हममें और पशुओं में अन्तर ही क्या है? हमें तो अपने से वैर करने वाले के साथ भी अधिक से अधिक प्रेम करना चाहिए। ऐसा करने से हमारा वास्तविक मनुष्यत्त्व सिद्ध होगा। अपने साथ कोई चाहे कितना ही कठोरतापूर्ण व्यवहार करे, किन्तु हमें उसके साथ प्रेम का ही व्यवहार करना चाहिए।

जब किसी को हम पर क्रोध होता है तो हमें समझना चाहिए कि हमारा कोई अपराध बन गया है इसी से तो इनको क्रोध आया है। यदि हमारा कोई भी अपराध न होता तो उन्हें अकारण ही क्यों क्रोध आता। इस प्रकार अपने पर दूसरे के क्रोधित होने में अपने को ही उसका कारण मानकर अपने को ही अपराधी समझना चाहिए। परन्तु यदि अपने को भी क्रोध आ गया तो फिर अपनी नीचता की चरम सीमा ही समझनी चाहिए।

किसी भी जीव पर क्रोध करना ॐ आनन्दमय भगवान पर ही क्रोध करना है। इसलिए किसी पर भी क्रोध न करके सबके साथ अहैतुक प्रेम करना चाहिए, क्योंकि किसी के साथ जो प्रेम करना है वह ॐ आनन्दमय भगवान के साथ ही प्रेम करना है। इस प्रकार के प्रेमपूर्ण व्यवहार के प्रभाव से हम ॐ आनन्दमय भगवान के परम प्रिय बन जायेंगे। गीता के १२वें अध्याय के १५वें श्लोक में ॐ आनन्दमय भगवान ने अपने प्रेमी भक्तों के लक्षणों का वर्णन इस प्रकार किया है–

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः।।

भावार्थ– जो किसी जीव को उद्विग्न करने का भाव नहीं रखता और जो स्वयं भी किसी जीवन से उद्वेग को प्राप्त नहीं होता, तथा जो हर्ष, अमर्ष, भय और उद्वेग आदि से रहित है– वह भक्त मुझको प्रिय है।

अत: साधको को निरन्तर ॐ आनन्दमय भगवान का स्मरण करते हुए ही उनकी आज्ञा के अनुसार सेवा करनी चाहिए और अपने मन के प्रतिकूल कार्यों को भी ॐ आनन्दमय भगवान का विधान समझकर सदा उनमें संतुष्ट रहना चाहिए, क्योंकि ॐ आनन्दमय प्रभु का प्रत्येक विधान जीवों के कल्याण के लिए ही होता है। यदि यह रहस्य यथातथ्य समझ में आ जाये तो ॐ आनन्दमय प्रभु का साक्षात्कार होकर सदा के लिए परमानन्द और परम शान्ति की प्राप्ति हो सकती है।

गीतोक्त निष्काम सेवायोग का स्वरूप और सकाम सेवा (कर्म)

जब से सकाम सेवा के अनुष्ठान में प्रवृत्त होने की इच्छा होती है, तब से आरम्भ तक और सेवा की समाप्ति के बाद चिरकाल तक मन में केवल फल का अनुसंधान रहता है। ऐसी सेवा करने वाले की चित्तवृत्तियाँ पद-पद पर अपने लक्ष्य-फल को विषय करती रहती है। यदि धन के लिए सेवा होती है तो उसे पल-पल उसी धन से स्मृति होती है। उसका चित्त धनाकार बना रहता है। सेवा की सिद्धि में जब उसे धन मिलता है, तब वह हर्षित होता है और जब असिद्धि होती है, धन नहीं मिलता या अन्य कोई बाधा आ जाती है, तब उसे बड़ा क्लेश होता है। उसका चित्त फलानुसंधान वाला होने के कारण प्राय: निरन्तर व्यथित और अशान्त रहता है। ऐसे पुरुषों का विषयविमोहित चित्त किसी-किसी समय उसे निषिद्ध कर्मों के करने में भी प्रवृत्त कर सकता है। यद्यपि 'श्री गीता जी' व 'श्री विश्वशान्ति शास्त्र' के आज्ञानुसार सेवाओं का आचरण करने वाला सकामी पुरुष निषिद्ध सेवाओं का आचरण करना नहीं चाहता, तथापि विषयों का लोभ बना रहने के कारण उसके गिर जाने का भय बना रहता है। कहीं सेवा में कुछ भूल हो जाती है तो उसे सिद्धि तो मिलती ही नहीं, उल्टे प्रायश्चित या दु:ख का भागी होना पड़ता है। परन्तु–

निष्काम सेवायोग

निष्काम सेवा का आचरण करने वाले पुरुष की स्थिति सकामी से अत्यन्त विलक्षण होती है। उसके मन में किसी प्रकार की सांसारिक कामना नहीं होती, वह जो कुछ करता है, सो सब फल की इच्छा को छोड़कर आसक्ति रहित होकर करता है। यहाँ पर यह प्रश्न होता है कि 'यदि उसे फल की इच्छा नहीं है तो वह कर्म करता ही क्यों है? संसार में साधारण मनुष्य बिना किसी हेतु के कर्म कर ही नहीं सकता और हेतु किसी न किसी फल का ही होता है। ऐसी स्थिति में फल की इच्छा बिना

कर्मों का होना सिद्ध नहीं होता।' –यह ठीक है।

साधारण मनुष्य के सेवा कार्यों में प्रवृत्त होने में किसी न किसी हेतु का रहना अनिवार्य है, परन्तु हेतु के स्वरूप भिन्न-भिन्न होते हैं। सकाम भाव से सेवा करने वाला पुरुष भिन्न-भिन्न फलों की कामना से नाना प्रकार के सेवा पूजा कार्यों को करता है, उसके सेवा-पूजा कार्यों में हेतु है– 'विषय-कामना'। इसीलिए आसक्त होकर वह सेवा करता है, उसकी बुद्धि कामनाओं से ढकी रहती है (देखो-गीता अध्याय २/४२-४४, ९/२०-२१)। इसीलिए वह सेवा की सिद्धि-असिद्धि में सुखी और दु:खी होता है, परन्तु निष्काम भाव से सेवा करने वाले पुरुष की सेवाओं में हेतु रह जाता है एक ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का साक्षात्कार। इसीलिए वह नित्य नये उत्साह से आलस्य रहित होकर सेवा-कार्यों में प्रवृत्त होता है, सांसारिक फल-कामना न होने से वह आसक्त नहीं होता और सेवा-कार्यों की सिद्धि-असिद्धि में उसे हर्ष-शोक का विकार नहीं होता, क्योंकि उसका लक्ष्य बहुत ऊँचा हो गया है। वह सेवा के बाहरी फल का कोई ख्याल नहीं करता, उसकी दृष्टि में संसार के समस्त पदार्थ उस ॐ आनन्दमय प्रभु के सामने अत्यन्त तुच्छ, मलिन और क्षुद्र प्रतीत होते हैं, वह उस महान से महान ॐ आनन्दमय प्रभु की प्राप्ति रूप शुभेच्छा में जगत् के सम्पूर्ण बड़े से बड़े पदार्थों को तुच्छ समझता है (श्री गीता अ० २/४९)।

इसी से सांसारिक विषय रूप फलों की प्राप्ति-अप्राप्ति में उसे हर्ष-शोक नहीं होता। सकामी पुरुष की भाँति उससे निषिद्ध सेवा बनने की भी आवश्यकता नहीं रहती। निषिद्ध सेवा-कार्यों में कारण है– 'आसक्ति या लोभ'। निष्कामी पुरुष जगत् के समस्त पदार्थों का लोभ छोड़कर उससे अनासक्त होना चाहता है। वह श्री ॐ आनन्दमय प्रभु को ही एकमात्र लोभ की वस्तु मानता है, उसी में उसका मन आसक्त हो जाता है, अतएव उसकी प्राप्ति के अनुकूल जितने कार्य होते हैं, वह उन सबको बड़े उत्साह के साथ करता है। वह निर्विवाद बात है कि ॐ आनन्दमय प्रभु की प्राप्ति के अनुकूल तो वे ही कार्य हो सकते हैं जिनके लिए ॐ आनन्दमय प्रभु ने आज्ञा दी है, जो श्री गीता शास्त्र और उसके बलशाली युवराज श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में निहित है, जो किसी के लिए किसी प्रकार से भी अनिष्टकारक नहीं होते, ऐसे सेवा-कार्यों में निषिद्ध सेवाओं का किसी प्रकार भी समावेश नहीं हो सकता, इसीलिए निष्कामी पुरुष सकामी पुरुष से सर्वथा विलक्षण होता है। ॐ शान्तिमय

भगवान-भगवान जपना, देश की सम्पत्ति ठगना और काम, क्रोध व लोभ में रत रहना क्या यह धर्मात्माओं का लक्षण है ?

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री विश्वशान्ति आश्रम

जी० ए० 1/13, त्रिवेणीपुरम, झूँसी, इलाहाबाद-211019

फोन- 0532-2569614 मो0-9319372829

आश्रम द्वारा आयोजित कार्यक्रमों का विवरण

इलाहाबाद– * मार्च अथवा अप्रैल में अर्द्धवार्षिक सत्संग
* 21 सितम्बर से 25 सितम्बर तक वार्षिक सत्संग
* 14 जनवरी से महाशिवरात्री तक माघ मेले में सत्संग
* 5 फरवरी को पूर्ण स्मृति समारोह
* प्रत्येक रविवार को आश्रम में सामूहिक सत्संग

बिजनौर : वर्ष के जून माह में 'बिजनौर सत्संग मण्डली' द्वारा सत्संग का आयोजन

कानपुर : अक्टूबर अथवा नवम्बर माह में 'कानपुर सत्संग मण्डली' द्वारा सत्संग

दिल्ली : नवम्बर माह में 'दिल्ली सत्संग मण्डली' द्वारा सत्संग का आयोजन

मुरादाबाद : नवम्बर माह में 'मुरादाबाद सत्संग मण्डली' द्वारा सत्संग का आयोजन

सहारनपुर : मार्च माह में 'सहारनपुर सत्संग मण्डली' द्वारा सत्संग का आयोजन

प्रचार-प्रसार

* इलाहाबाद में 14 जनवरी से फरवरी माह में महाशिवरात्री तक माघ मेले में वाहन और स्टॉल द्वारा ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार का कार्य किया जाता है।
* जुलाई माह में गोवर्धन में वाहन द्वारा ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार का कार्य किया जाता है।
* दीपावली के शुभ अवसर पर प्रत्येक वर्ष चित्रकूट में चार-पाँच दिन का वाहन द्वारा प्रचार-प्रसार का कार्य किया जाता है।
* नगर में सुविधानुसार विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर वाहन द्वारा प्रचार-प्रसार।
* प्रत्येक महाकुम्भ और अर्द्धकुम्भ के अवसर पर हरिद्वार, नासिक, उज्जैन में वाहन व स्टॉल लगाकर ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार का कार्य भगवत भक्तों द्वारा किया जाता है।

पवित्रता (शुद्धि) का ज्ञान

श्री भगवत् अनुकूल बाहिर एवं भीतर की शुद्धि से ही मनुष्य महा भाग्यवान बनता है अर्थात् सुख, शान्ति, आनन्ददायक ज्ञान शक्ति के आचार्य पद को प्राप्त होता है।

(१) दिमागी उन्नति के लिये मकान आवश्यकता अनुसार छोटा, जन समुदाय से दूर, ऊँचे स्थान पर एवं घेरा स्वच्छ दुर्गन्ध रहित हो, मकान की लिपाई सफेद हो, दिवारों पर महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' तथा श्री भगवत् मर्यादा सद्गुण-सदाचार का ज्ञान लिखा हो। कमरों में सद्गुण-सदाचारी श्री ध्यानमग्न देव-देवाङ्गनाओं के सजीव चित्र सुशोभित हो इत्यादि से भूतकाल के राजसी-तामसी संस्कारों की शुद्धि एवं प्रेम-प्रसन्नता होती है।

(२) मकान में चूहे, मच्छर, मक्खी, खटमल, पिस्सू आदि पैदा न हों, इसके लिए दवाई आदि द्वारा यथोचित प्रबन्ध करें। धूप-अगरबत्ती के प्रयोग से वायु-मण्डल की शुद्धि होती है।

(३) बड़े पेड़ निवास स्थान से दूर हों सम्मुख मधुर-सुगन्धित पुष्प वाटिका हो जिसमें तुलसी के पौधे अवश्य हों, सब पौधे हरे भरे, सुशोभित लाभ कारक हों, प्राकृतिक सौन्दर्य के दृश्य से अप्रसन्नता की शुद्धि होती है।

(४) सम्पूर्ण पदार्थ सफेद सात्त्विक हों और आवश्यकता से अधिक संग्रह न हो एवं यथायोग्य स्थानों पर इस प्रकार सजे हों कि अपनी तो बात ही क्या नया प्रेमी भी सुगमता से प्रयोग कर सके। पदार्थों की यथायोग्य सजाई से मानसिक विक्षेप की शुद्धि होती है।

(५) पहनने के और बिछाने के तथा अन्यान्य सभी वस्त्र सादे सफेद, सुगन्ध-दुर्गन्ध रहित हों, शीतकाल के ऊनी वस्त्र भी सफेद धारण किए जायें और यथासमय धूप में रखें जायें। पहनने वाले वस्त्रों को प्रतिदिन खुले जल से धोया जाय। वस्त्रों की शुद्धि के लिए खर्च व परिश्रम कम तथा आयु व सफाई अधिक हो इत्यादि वस्त्रों की धुलाई विषयक सात्त्विक ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है।

(६) शरीर स्वच्छ रहे, कोई भी अंग मैला न हो। गर्मियों में दो बार और शीतकाल में एक बार स्नान अवश्य करें। स्नान के समय शरीर को गीले तौलिये से रगड़ कर शुद्ध करें, अधिक मैला होने से सुगन्धि रहित साबुन से शुद्ध करें। स्वस्थ अवस्था में सूर्योदय के पूर्व ही शीतल जल से स्नान करने की आदत रखें। नेत्र, कान, नासिका, जिह्वा, शौच तथा लघुशंका के स्थान दुर्गन्ध रहित स्वच्छ रखने से शरीर निरोग, मन प्रसन्न और समाज में प्रेम होता है।

(७) खड़िया मिट्टी, अकरकरा, नमक, काली मिर्च के मंजन से दाँतों की शुद्धि होती है।

(८) बेल, पपीता, इसबगोल से शौच (पेट) की शुद्धि होती है।

(९) पोटाश द्वारा तथा उबालने से जल के किटाणुओं की और फिटकरी द्वारा जल में मिश्रित मिट्टी की शुद्धि होती है।

(१०) आबादी से दूर निवास स्थान होने से जहरीली गैस युक्त वायु की तथा प्राणायाम से भीतरी वायु की शुद्धि होती है।

(११) शिक्षित वैद्य-डॉक्टरों की औषधियों से रोगों की शुद्धि होती है।

(१२) सात्त्विक भोजन के पदार्थों को सात्त्विक ज्ञान से एवं पवित्रता के साथ बनाने से आहार की शुद्धि होती है।

(१३) पर हक का त्याग करते हुए सत्यतापूर्वक धनोपार्जन से अर्थ की शुद्धि होती है।

(१४) इन्द्रिय संयमयुक्त गुणों को धारण कर ज्ञान-शक्ति अनुसार पुरुषार्थ (सेवा) करने से अनुकूल प्रेमी-पदार्थों के अभाव की शुद्धि होती है।

(१५) अनावश्यक इन्द्रिय भोगों का त्याग व सम्पूर्ण इन्द्रियों का व्यवहार कोमल, मधुर, हितमय, अर्थात सात्त्विक ज्ञान से पूर्ण होने से मानसिक रोगों की शुद्धि होती है।

(१६) श्री भगवत् कृपा के ज्ञान से परिग्रह की शुद्धि होती है।

(१७) श्री प्रभु के दण्ड के ज्ञान से पर-हितकारी हिंसामय भाव-आचरणों की शुद्धि होती है।

(१८) श्री प्रभु के पुरस्कार के ज्ञान से अकर्मण्यतायुक्त आलस्य और प्रमाद की शुद्धि होती है।

(१९) श्री ध्यान-समाधिमग्न महापुरुषों की आज्ञापालन से निर्भागी बनाने वाले असुर मनुष्यों के अज्ञान की शुद्धि

होती है।

(२०) गुणवानों के अनुकूल सेवा-शुश्रूषा करने से कलह रूपी बीमारी की शुद्धि होती है।

(२१) सीमित ममता बुद्धि युक्त प्रेमी-पदार्थों के संग्रह के त्याग से ईर्ष्या की शुद्धि होती है।

(२२) चिन्ता, क्रोध, कपट एवं स्वार्थ-अहंकार के त्यागी अनुकूल सेवा-शुश्रुषा करने वाले प्रेम-प्रसन्नतायुक्त परिवार के सम्पर्क से अशान्तिदायक कलह की शुद्धि होती है।

(२३) संतोष से कामना की शुद्धि होती है।

(२४) अमृतदायक सहनशीलता को धारण करने से विषदायक क्रोध की शुद्धि होती है।

(२५) क्षमा से वैर की शुद्धि होती है।

(२६) स्थावर जंगम चराचर में श्री आनन्दमय भगवत् दर्शन के अभ्यास से घृणा की शुद्धि होती है।

(२७) समता के अभ्यास से राग-द्वेष की शुद्धि होती है।

(२८) ध्यानमग्न श्री भगवत् प्रेमियों की निष्काम सेवा से भौतिक स्वार्थ एवं अहंकार की शुद्धि होती है।

(२९) सुखी-शान्तिमानों के दर्शन-श्रवण से दुर्गुण-दुराचारों की शुद्धि होती है।

(३०) श्री प्रभु के मंगल-विधान के ज्ञान से चिन्ता की शुद्धि होती है।

(३१) श्री ध्यान-समाधिवानों के समागम से मल-विक्षेप-आवरण की शुद्धि होती है।

(३२) हृदयस्थ श्री प्रभु की आज्ञा को पहचानने की योग्यता से संशय-भ्रमों की शुद्धि होती है।

(३३) श्री ध्यानमग्न प्रेम-प्रसन्नतायुक्त देव समाज के प्रेम से दुख-अशान्तिदायक चिन्तित-क्रोधित असुर समाज की शुद्धि होती है।

(३४) ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करते हुए श्री समता-समाधियुक्त श्री महापुरुष भगवान के स्वरूप के स्मरण (याद) तथा ध्यान करने से मन की शुद्धि होती है।

(३५) श्री समतामय महापुरुषों के ज्ञान (को धारण करने) से बुद्धि की शुद्धि होती है।

(३६) अपने को अनन्त, अपार, असीम मानने से आत्मा की शुद्धि होती है।

अपने सहित परिवार का जीवन सुखमय, शान्तिमय, आनन्दमय बनाने के लिए उपरोक्त गुण आदर्श हैं। इन आदर्श गुणों से युक्त श्रीमती देवाङ्गना देवियां और श्रीमान देव स्वरूप महापुरुषों के दर्शनार्थ श्री विश्वशान्ति आश्रम में पधारिए।

ॐ शान्तिमय

सद्गुण-विद्या के बिना विश्व में जितनी भी विद्याएँ आनन्द-शक्तिदायक मानी जाती हैं वह सभी चिन्ता, क्रोध, भय और नाराज़गी दायक हैं अर्थात् अमूल्य मानव देह को दुःखमय-अशान्तिमय बनाने वाली हैं।

विचार करें ! आसुरी अहंकार को धारण करने वाले गुरुओं की, राजा-रानियों की, धनियों की, इन्द्रिय भोगी मनुष्यों की, सन्तान तैयार करने वाले माता-पिता आदि की आशा, कर्म और ज्ञान व्यर्थ ही नहीं हुआ

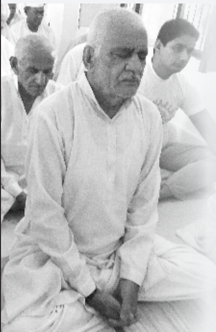

अपितु राजसी-तामसी कर्म करने वाले मनुष्यों का जीवन भगवत् दण्ड विधान से महाघोर पश्चाताप दायक होता आया है।

मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः।
राक्षसीमासुरी चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः।।९/१२

सत्य-असत्य पर मनन-विचार

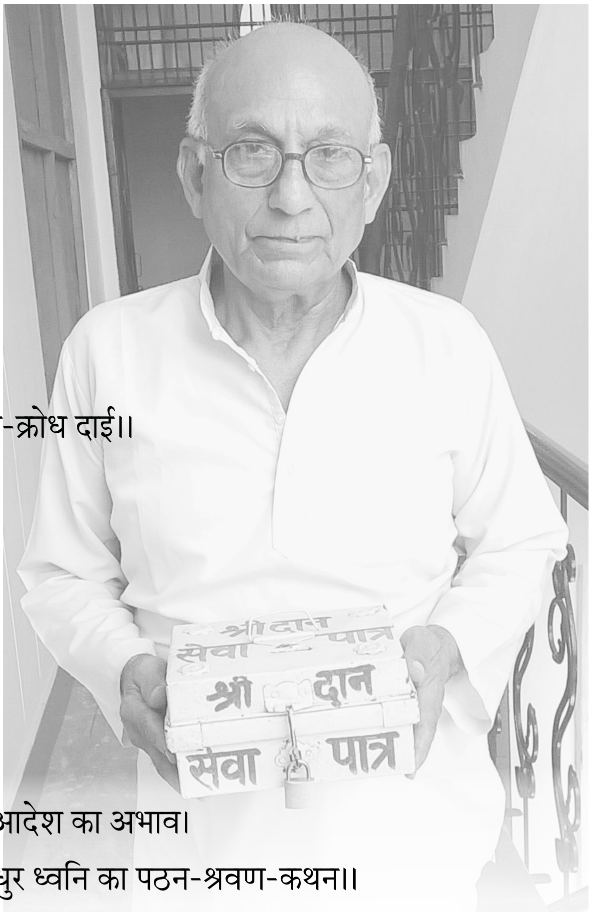

सत्य का दिमाग महावीर।

असत्य का दिमाग चौपट।

सत्य आठ सिद्धियों का दाता।

असत्य आठ असिद्धियों का दाता।

सत्य का भजन-ध्यान-स्मरण-चिन्तन।

असत्य का बैण्ड-बाजा, भोगों की मधुर संगीत।।

सत्य का तन-मन-धन-विद्या, मान-बड़ाई, सुख-शान्ति दाई।

असत्य का तन, मन, धन, विद्या, मान, बड़ाई, दुख-अशान्ति, चिन्ता-क्रोध दाई।।

सत्य का जोश, उत्साह, तत्परता, लग्नता सद्‌गुणों की प्राप्ति।

असत्य का जोश, उत्साह, तत्परता, लग्नता अवगुणों की प्राप्ति।।

सत्य-प्रेम-प्रसन्नता-शान्ति-सन्तोष का दाता।

असत्य-राग-द्वेष, चिन्ता-नाराज़गी, कलह-क्लेश असन्तोष का दाता।

सत्य की झोपड़ी-कुटिया, सेवा-संयम-स्मरण।

असत्य का महल-बँगला, भोग, ऐश, आराम।।

सत्य में– भोगों के प्रति वैराग्य, भोगों की जागृति कराने वाले उपदेश-आदेश का अभाव।

असत्य– भोगों में राग, शंकर की बारात, अयोध्या में बैंड-बाजों की मधुर ध्वनि का पठन-श्रवण-कथन।।

सत्य का– एक रुपया, शान्ति, सन्तोष।

असत्य का– विपुल धन-दौलत-अशान्ति असन्तोष।।

सत्य– सदा भगवान को देखता है। भगवान का प्यारा। 'विदुरजी'

असत्य– सदा संसार का दर्शन करता है, संसार का प्यारा।। 'दुर्योधन'

उदाहरण– दो छात्र, महाभारत जुआ, द्रौपदी।

श्रद्धा-प्रेम, विश्वास में प्रेम बड़ा है, प्रेम की बाहुल्यता में मुग्धता हो जाती है- करने वाला, कराने वाला में। प्रेम में साधना की गाड़ी प्रेमरूप पटरी पर अपने आप दौड़ती है। प्रेम की अतिशय बाहुल्यता में छिलके खिलाये जा रहे हैं और छिलके खाये जा रहे हैं।

यह सब होने पर भी दयासागर ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी ने सत्यवादी और असत्यवादी दोनों की जीवन-यात्रा चलाने के लिये समान भाव से जीवन शक्तियाँ प्रदान कर रखी है, जैसे जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश। इसके बिना जीवन-यात्रा नहीं चल सकती, फिर इसका कोई मूल्य नहीं। कोई टैक्स नहीं, कोई बिल नहीं आता, अपनी-अपनी आवश्यकता अनुसार उपभोग करो, बात यह भी है कि आवश्यकता से अधिक उपभोग करना हानि का अनुभव करता है। इन शक्तियों के बराबर भूत में न कोई शक्ति थी, न वर्तमान में है और न ही भविष्य में होगी। फिर भी इन तत्त्वों का उपभोग मानव-दिमाग कर रहा है। जैसे वायु है।

वायु शक्ति से ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी जीवधारियों का संचालन कर रहे हैं, जिस अंग में जहाँ इसकी कमी आती है, वही वेदना के साथ अन्य विकार पैदा हो जाते हैं।

मानव ने इसको यंत्रों द्वारा ट्यूबों में भर कर छोटे-बड़े सब

प्रकार के यंत्रों को संचालित कर रहे हैं। सड़कों पर बसें, ट्रकें, अनेक प्रकार के साधन, बाइक, साइकिलें जो दौड़ रही हैं, यह वायु शक्ति का ही प्रभाव है और जब हवा एकायक ट्यूबों से निकल जाती है, तब छोटे-बड़े सभी वाहन खड़े हो जाते हैं। इसी प्रकार अन्य शक्तियों की तो बात ही क्या केवल वायु शक्ति के अभाव में जीवन यात्रा समाप्त हो राम-राम सत्य हो जाता है। यदि मानव जन्म पर खुशी की जगह दु:खी हो और मरने पर दु:खी की जगह खुशी हो, प्रसन्नता हो, फिर तो जीवन में सदा सत्य का ही प्रकाश रहेगा, अंधकार रूपी असत्य का अभाव हो जायेगा।

समुद्र का जल भाप-रूप में ही आकाश में पहुँचता है अन्यथा आकाश में पहुँचने का और कोई साधन नहीं। इसी प्रकार सत्य से ही परम आनन्द धाम भगवान तक पहुँचने का साधन है, अन्यथा समस्त आशायें, समस्त कर्म, समस्त ज्ञान सब व्यर्थ एवं पश्चाताप दायक हो जाते हैं। श्री गीता अ० ९ श्लोक १२।

जल का बूँद आकाश से सदा ही पृथ्वी पर धराशायी होता आ रहा है। इसीलिए अपने धराशायी होने वाले जीवन की रक्षा करनी चाहिये और रक्षा का एक ही साधन है– सत्य का आश्रय अर्थात सत्य स्वरूप ॐ आनन्दमय भगवान हैं। जैसे आकाश में बूँद के पहुँचने का एक ही आश्रय है भाप का।

प्रभु पिताजी असत्य जीवन को सदा से धराशायी करते आ रहे हैं और करते ही रहेंगें। सत्य जीवन सदैव ऊपर उठकर अथाह असीम-अनन्त ॐ आनन्दमय परमात्मा में समाहित हो जाता है।

सत्य भगवान से डरता है– मनुष्य से नहीं।

असत्य मनुष्य से डरता, भगवान से नहीं।।

जाने के पूर्व जो सारी तैयारी कर लेता है वह खुशी-खुशी हँसते हुये जाता है, शेष सब रोते रहते हैं!

अनन्य प्रेम-योग के आचार्य ॐ श्री ब्रह्मदर्शी गुरुभगवान शरणं

आनन्द-शान्ति का मार्ग

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' भगवान के नाम-रूप की प्रत्येक सेवा-योग के कार्य करते हुये घड़ी यंत्र के सदृश सतत-स्मृति करने के अभ्यास की वृद्धि करते रहना। यह साधन हृदय में शीघ्र ही विशुद्ध प्रेम की और प्रसन्नता की वृद्धि करने वाला है। भगवत-प्रेम-प्रसन्नता में मग्न रहना ही आनन्द शान्ति का मार्ग है। ध्यानयोग और सेवायोग द्वारा आनन्द-शक्ति युक्त भगवत-पद की प्राप्ति करना और ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का दर्शन करना यही मानवदेह प्राप्त करने का अमृतमय अमर-फल है।

सद्गुण सम्पन्न ॐ आनन्दमय भगवान-शरणं।

काम-क्रोध के प्रभाव का ज्ञान

काम विजयी ॐ आनन्दमय महामंत्र चिन्ता और नाराज़गी नाशक तथा आत्मिक आनन्द का दाता है। क्रोध विजयी ॐ शान्तिमय महामंत्र दिमागी अशान्ति का नाशक और दिव्य शान्ति का दाता है।

स्मृति रहे ! सद्गुण सम्पन्न सदाचारी विद्यार्थी परिवार के देश के और विश्व के भाग्य-विधाता होने का विधान है। प्रेम-प्रसन्नता के त्यागी और चिन्ता-क्रोध के रागी छात्र-छात्राओं का चरित्र होगा कैसा ? तामसी दुर्योधन और सूपनखाँ के जैसा।

मानव जीवन के पूर्व हमारा जीवन पशु-पक्षी-जानवरों की योनियों में था !

हम इस दु:खमय-अशान्तिमय संसार में पशु-पक्षी-जानवर बनने के लिये नहीं आये हैं और ना ही पशु-पक्षी-जानवर बनने वाले कर्मों को करने-कराने के लिये आये हैं।

हम आये हैं– मानव हितकारी श्रेष्ठ पुनीत कर्म-धर्म-आचरण करने के लिये। हम मानव अनिष्टकारी उग्र कर्म करने के लिये नहीं आये हैं। श्री गीता अ०१६ श्लोक १८-१९ एवं श्री गीता अ०९ श्लोक ३३, अ०८ श्लोक १४-१५ ।

ॐ शान्तिमय

भविष्य के लिये यह शुभ-सन्देश सभी के लिये प्रेषित है

श्रेष्ठ उमरिया बीत जायेगी, दुःखालय की बाढ़ समीप आ जायेगी और जीवन दुःख शोकामय प्रदा बन जायेगा।

प्रशान्तमनसम् अत्यन्तम् सुखम् अश्नुते, श्री गीता अ० ६ श्लोक २७,२८।।

अन्यथा– जरा व्याधि दुःखम् अशमः

कोई न आवे पासा, अ० १३ का ८ ।।

अतः निराशीः निर्ममः अ० ३ श्लोक ३० ।।

।। लंगर को उठाने का यन्त्र ।।

इस लंगर उठाने वाले यंत्र के ज्ञान को पूर्व वर्षों में पूज्य छोटी बहन जी के मुखार बिन्दु से समय-समय पर सामूहिक सत्संगों में श्रवण कराया जाता रहा है। अब इस ज्ञान को आश्रम से प्रकाशित होने वाली सर्व प्रथम पत्रिका जो २००८ में प्रकाशित हुई थी उसमें प्रकाशित कराया गया है, जिसका शीर्षक है–

''लंगर को उठाने का यन्त्र''

लंगर कहते हैं– जैसा कि श्रवण-दर्शन किया है, मल्लाह लोग नाव को बाँधने के लिये लँगर रखते हैं। लंगर ठोस लोहे का बना होता है, जो आगे गोल तिरक्षा होता है जिससे वह जमीन या बालू में धँसा रहता है उसमें नाव को रस्से से बाँध दिया जाता फिर वह बहती नहीं, पानी में दिखलाई देती रहती है।

इसी प्रकार ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी की अहैतुक कृपा से बहुत तरह-तरह के अनुभव होने के पश्चात् सुख-सुविधायें प्राप्त होती है। त्याग-वैराग्य की भावनायें जागृत होती है। सत्कार, मान, सम्मान प्राप्त होता, फिर कई तरह की कार्य करने-कराने की इच्छा पैदा हो जाती है। बस इन सब लंगर में अपनी जीवन नौका को बाँध देता है। तो जैसे नौका जल पर दिखाई देती है परन्तु आगे नहीं जा सकती। इसी प्रकार आश्रम में निवास होने पर भी आगे बढ़ने पर अवरोध आ जाता है। इसीलिये दिमागी तत्त्व के विशेषज्ञ श्री विधानाचार्य भगवान ने ऐसे लंगर को उठाने का यन्त्र रूपी जो ज्ञान दिया है, उसको बारम्बार स्मृति हेतु उच्चारण करने की पूजा की जाती रही है। आज के पुनीत दिवस पर उसको उच्चारण करने की पूजा की जा रही है।

इस चित्त-विचित्र भगवत-सृष्टि की रचना कर जगत-नियन्ता सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी ने इष्ट-स्वरूप ॐ आनन्दमय भगवान के सिवाय किसी को भी याद करने का आदेश नहीं दिया है। अन्तिम आदेश श्री गीता अध्याय अ०१८ श्लोक ६५ ।

नियत सेवा-कार्यों के अतिरिक्त किसी भी देवी-पुरुष या सज्जन-दुर्जन अथवा प्रेमी-पदार्थों को याद करने का आदेश नहीं है। इस वैधानिक ब्रह्मज्ञान के आदेश का श्री गीता अ०१४ का श्लोक २६ का पठन-श्रवण कर समाधान करना चाहिये। यही अपनी जीवन नौका के लंगर को उठाने का ज्ञान है।

आश्रम में निवास कर्त्ताओं को अपने जीवन को भगवत विधान से श्रेष्ठ, पवित्र, निर्मल, आदर्शयुक्त एकनिष्ठ बनाते रहने का अखण्ड-पुरुषार्थ करते रहना चाहिये। क्योंकि विशेष जिम्मेदारी आश्रम में निवास कर्त्ताओं पर आती है। अतः भगवत-विधान के अनुसार एवं आश्रम की मान-मर्यादा को पवित्र-उज्जवल बनाये रखने के लिये अपनी दैनिक दिनचर्या के साथ सभी प्रकार की सेवा-पूजा को करते हुए प्रेम, प्रसन्नता, धैर्य, उत्साह पूर्वक सबके साथ यथा योग्य व्यवहार करते हुये अनावश्यक दर्शन-श्रवण संग दोष से सावधान रहना चाहिए, नियत सेवा के अतिरिक्त अन्य-अन्य सेवा-पूजा को भी देखते सम्भालते रहने की प्रवृत्ति रखनी चाहिये। विशेष महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह सब करते हुए भगवान के नाम जप और स्वरूप की विशेष रूप से स्मृति बनाये रखने का पुरुषार्थ होता रहे तभी हम भगवान

की कृपा के विशेष पात्र बनेंगें और उनके दिव्य आदेशों की कीर्ति को भव्यता को, प्रचार-प्रसार को जन-जन में जागृत कर सकेंगे। इस प्रकार उत्साह पूर्वक प्रवृत्ति बनाये रखने पर विशेष कृपा-शक्ति प्राप्त होती है।

आश्रम में निवास-कर्त्ताओं को हमेशा ॐ आनन्दमय भगवान की महान-कृपा समझनी चाहिये। भगवत भावों से झाड़ू लगाने की सेवा से जो दिव्य शान्ति की प्राप्ति होगी, वह अनावश्यक स्वेच्छा पूर्वक कर्मों को करने से नहीं होगी। अत: निरन्तर एकनिष्ठ, आदर्श आचरणों के साथ, एक उद्देश्य, लक्ष्य और सिद्धान्त होना चाहिए। जिसके लिये सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी का आदेश श्री गीता अ० १४ श्लोक २६, २७ में कथन किया है एवं इसी को लंगर उठाने को कथन किया है, बस ब्रह्म-सृष्टि में इसके अतिरिक्त सब दु:खमय है, अशान्तिमय है। बन्धनमय है। यह अनादि सिद्ध भगवत विधान है। ॐ शान्तिमय।

दिमागी मानसिक वैद्यराज श्री महापुरुष भगवान का अमृतमय अखण्ड-विधान श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ में प्रकाशित है। उसमें श्री गुण-विद्या के प्रथम पाठ में प्रकाशित है। पृष्ठ ११८ पर .... सद्गुण विद्या के बिना विश्व में जितनी भी विद्यायें आनन्द-शान्तिदायक मानी जाती है। वह सभी चिन्ता, क्रोध, भय और नाराज़गी दायक है अर्थात् अमूल्य मानव देह को दु:खमय अशान्तिमय बनाने वाली है।

हे सन्तोषमय भगवान् ! मैं राजसी-तामसी मनुष्यों के सदृश धन-जन व यश-मान सम्पन्न बनने की कामना का त्याग करुँगा। अ०९ श्लोक १२ ।

हे श्री शान्तिमय प्रभो ! मैं भगवत आनन्द शान्तियुक्त सद्गुण सदाचार से श्रेष्ठ भावमय हूँ। धन, पद, भेष, भाषा व जाति से श्रेष्ठ भावमय नहीं। हे श्री शान्तिमय प्रभो ! मैं गुणवानों की आज्ञापालन भावमय हूँ, माता-पिता, पति-पत्नी की राजसी-तामसी आज्ञापालन भावमय नहीं। ॐ शान्तिमय

कुम्भ मेला एवं चित्रकूट मेला में भगवत प्रेमियों और कानपुर में स्कूली छात्राओं द्वारा प्रभु पिताजी के ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार

दयालु की दयालुता का प्रभाव

नभ-सुशोभित आकाशी मण्डल का ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी हर क्षण परिवर्तन करते रहते हैं। सूर्य, चाँद, तारों के साथ ही साथ अनेकों पृथ्वियों को घुमाते रहते हैं। जैसे बालक लट्टू घुमाते हैं, इसी प्रकार आश्चर्यमयी अद्‌भुत लीलाओं के निर्माता ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी बाल खेल के समान समस्त ब्रह्माण्डों को चक्कर में घुमाते हुये क्रीड़ा करते रहते हैं। क्रीड़ा-स्थल के खिलाड़ी समस्त रचनाओं के अध्यक्षक दण्ड-पद के दाता, सर्वज्ञ ॐ आनन्दमय प्रभु पिता समस्त मानव मण्डल को उनके दिमागी मनन विचारों के अनुरूप भ्रमण कराते रहते हैं। श्री गीता अ० १८ श्लोक ६१ का हिन्दी भावार्थ श्री भगवान कहते हैं कि शरीर रूप यंत्र में आरूढ़हुये सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से उनके कर्मों के अनुसार भ्रमण कराते हुए सब प्राणियों के हृदय में स्थित हैं।

सृष्टि-चक्र के निर्माता ॐ आनन्दमय भगवान इस प्रकार भ्रमण कराते रहेंगे— कब तक?

श्री गीता अ०८ श्लोक ७ के अनुसार और १४ के अनुसार ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के नियम अनुसार साधन कर परम सिद्धि रूप ॐ आनन्दमय भगवान को प्राप्त नहीं कर लेते तब तक। हाँ श्लोक १५, १६ के विधान के अनुसार पुनः, पुनः जन्म-मरण में भ्रमण कराने वाले चक्कर सदा के लिये समाप्त हो जाते हैं।

इस भगवत सृष्टि में एक ही स्वरूप है एक ही तत्त्व है, एक ही विधान है और उसी को जानना ज्ञान है। ऐसा ज्ञान होने पर फिर और कुछ जानना शेष नहीं रह जाता है। श्री गीता अ० ७ श्लोक १ और २ ।

परन्तु इस प्रकार तत्त्व से जानने वालों की दुर्लभता का वर्णन श्री गीता अ० ७ श्लोक ३ में किया है।

हाँ ! विज्ञान सहित तत्त्वज्ञान को जानने के बाद समस्त संशय-भ्रम की तरंगे शान्त होकर एकनिष्ठ, अचल, सत्य स्वरूप ॐ आनन्दमय भगवान के स्वरूप में तदाकार हो जाती है।

करिष्ये वचनं तव के प्रभाव से निरन्तर उठने वाली मानसिक संकल्पों की तरंगे शान्त होने का विधान है।

मनुष्य को पात्र बनने में समय लगता है

मनुष्य को पात्र बनने में समय लगता है, योग्य बनने में समय लगता है। आरूढ़ होने में समय लगता है, परन्तु उद्धार होने में समय नहीं लगता। अतः भगवान से प्रार्थना करना चाहिए कि हे प्रभो ! उपाधियाँ तो बहुत लगी हैं, परन्तु यह सब हट जायें- ऐसी आप कृपा-दृष्टि करें। नाम की उपाधि, जाति की उपाधि, वर्ण की उपाधि, धर्म की उपाधि, बल-पौरुष की उपाधि, मान-सम्मान की उपाधि, साधु-महात्मा की उपाधि, महा-मण्डलेश्वर की उपाधि, शरीर की उपाधि देश की उपाधि, इस प्रकार सैकड़ों उपाधियाँ लगी हैं।

जब तक उपाधि है तब तक व्याधि है। परन्तु लोगों को समझाने के लिये इसका प्रयोग करने में अपराध तो नहीं है पर इनका अभिमान होना व्याधि है, जिसको जितनी उपाधि प्राप्त है उतनी ज्यादा व्याधि है एवं जिसके ज्यादा उपाधि हैं उसके उद्धार होने में उतना ही अधिक समय लगेगा। जिस प्रकार दूध में जितना अधिक पानी मिला होगा उसको जलाने में उतना अधिक समय लगेगा।

मैं योगी हूँ, मैं महात्मा हूँ, सन्यासी हूँ, मौलवी हूँ, पादरी हूँ, मैं भक्त हूँ, पुजारी हूँ, पण्डित हूँ, पण्डा हूँ इत्यादि यह बड़ी-बड़ी व्याधियों का अहंकार दल-दल में गले तक फँसने के लिये हैं। अहंकारी व्याधियों के नाश के लिये ही पुनर्जन्म होता है।

''मान-बड़ाई विष है परिणाम मृत्यु''

अतः मान-बड़ाई से बचे, उपाधियों से बचें।

ॐ शान्तिमय

अभिभावकों की अपेक्षाएँ बच्चों से .....

प्रियवर बालक-बालिकाओं !

(१) अपने उच्च उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील रहो !

(२) श्रेष्ठ व्यक्तियों के परामर्श को ध्यानपूर्वक सुनो और उन्हें पूरा करने की कोशिश करो।

(३) जब भी प्रात:काल में कोई तुमसे मिले उसे हमेशा श्री मंत्र उच्चारण एवं हाथ जोड़कर प्रणाम करो!

(४) अपना अध्ययन नियमित रूप से करो!

(५) अपने दिनचर्या की समय सारिणी बनाओ उसमें घर के सेवा-कार्यों को करने को भी स्थान दो!

(६) अपनी दैनिक ईश्वर प्रार्थना मंत्र-जप-ध्यान नियमित रूप से करो।

(७) उनको ही अपना मित्र बनाओ जो विचारों से समानता रखते हों।

(८) कभी भी बड़ों को पाठ न सिखाओ।

(९) ऐसा कोई कार्य न करो जिसका बाद में पश्चाताप करना पड़े।

(१०) कठिनाइयों का साहस से मुकाबला करें।

(११) अपनी शंकाओं को बड़ों को अवश्य बतायें।

(१२) किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर पेश न करें अन्यथा लोग आपके निर्णय और आपकी विश्वसनीयता पर शंका करने लगेंगे।

(१३) जब कभी गलती हो जाये तो तुरन्त गलती अनुभव करते हुए माफी माँगो !

(१४) जब कभी कुछ अच्छा करने का अवसर आए, मत छोड़िये !

(१५) तरुण अवस्था जीवन का वह समय है जिसका सदुपयोग किया जाए तो अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण हो जाता है।

(१६) किसी भी व्यक्ति की अच्छाइयों की प्रशंसा करने में हिचकिचाहट न करें।

(१७) कभी शेखी न मारो, कभी दिखावा न करो, ऐसा कुछ न कहो जो असत्य व कटु हो।

(१८) श्रेष्ठ ज्ञान की पुस्तकों को एकाग्रचित्त होकर पढ़ें ! खाली बैठकर समय नष्ट न करें।

(१९) कभी भी बड़ों के सामने ऊँचा न बोलो।

(२०) प्रतिदिन श्रेष्ठ शब्दों को अपने ज्ञान कोष में बढ़ायें !

(२१) यदि कोई कुछ उपहार देता है तो उसकी कीमत मत जानिए। प्रेमपूर्वक ग्रहण कीजिए।

(२२) सदैव साफ-सुथरे वस्त्र धारण करे और अपने साधनों की सीमा में रहें।

(२३) अपना नियोजन स्वयं करने की आदत डालो !

(२४) जब भी समय मिले उपयोगी पुस्तकें पढ़ो !

(२५) धैर्यपूर्वक सुनने की आदत डालो !

(२६) सदैव उच्च आदर्श सामने रखो !

(२७) सही और गलत को पहचानने की योग्यता प्राप्त करो।

(२८) कुछ आकस्मिक समय के लिए खाना बनाना और घर के अन्य कार्यों में भी सहयोग करना सीखो !

(२९) बचत की आदत डालें !

(३०) असमय में अनावश्यक माँग न करें।

(३१) इधर-उधर चट-पटा मिर्च मसालेदार खराब भोजन न लो।

(३२) अपनी मांग रखने से पूर्व सोचो कि इसे अभिभावक पूरा कर सकते हैं या नहीं।

(३३) अपने पड़ोसियों को जानों-पहचानों, उनके साथ अच्छा व्यवहार करो।

(३४) कभी भी अशिष्ट भाषा का उपयोग न करो सदैव प्रिय बोलो।

(३५) संसार की नकल मत करो अच्छी बातों को ग्रहण करो, अच्छे लोगों का अनुसरण करो !

(३६) धार्मिक उपदेशों को सुनने, सत्संग में भी जाओ। वहाँ बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

(३७) यदि कोई गलती हो जाये तो क्षमा याचना अवश्य कर लो।

(३८) वीरता से रहो।

(३९) आप आत्मविश्वास से जिये और उसे चेहरे पर झलकने दें !

(४०) दूसरों के साथ वैसा ही अच्छा व्यवहार करो जैसा आप दूसरों से चाहते हो।

(४१) अपनी प्रशंसा स्वयं न करो।

(४२) कभी-कभी कुछ कष्ट सहने पर ही सुख की प्राप्ति होती है। इसलिए धैर्यपूर्वक कुछ सहन कर लिया करें।

(४३) सदैव याद रखो कि भगवान सभी जगह हैं और सभी को देखते हैं !

(४४) सच्चाई का मार्ग कभी न छोड़ो !

(४५) सुस्त न बनों ।

(४६) भोजन करने से पहले हमेशा अपने हाथ धोने चाहिए ।

(४७) कभी भी किसी को धोखा नहीं दें ।

(४८) समय अमूल्य है उसे बरबाद न करो ।

(४९) सभी के साथ नम्रता का व्यवहार करो ।

(५०) जब तुम ठीक रास्ते पर हो तो उस पर दृढ़ता पूर्वक जमें रहो !

श्री गुरु पूर्णिमा

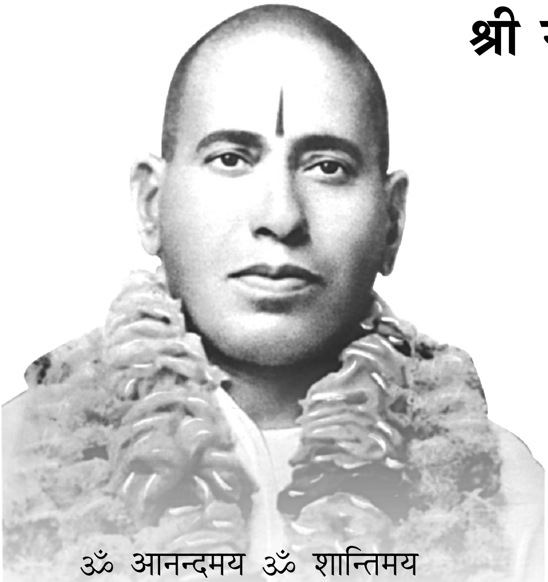

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

गुरु और शिष्य के सम्बन्ध का प्रभाव और माहात्म्य आध्यात्मिक-क्षेत्र में जैसा मिलता है, उसका तो कोई मिसाल ही नहीं अर्थात् उदाहरण ही नहीं, परन्तु मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये! 'श्री गीता अ०७ श्लोक३'

भौतिक क्षेत्र में जो गुरु-शिष्य का सम्बन्ध है, उसका तो कोई मूल्य 'तत्त्व' ही नहीं, वहाँ का सम्बन्ध तो केवल धन-मान-समाज एवं भौतिक-पदार्थों तक ही सीमित होता है।

अध्यात्मिक क्षेत्र में भी गुरु-शिष्य का सम्बन्ध कैसा होना चाहिये, गुरु कैसा होना चाहिये, शिष्य किन भावों से आचरणों से युक्त होना चाहिए इस विषय में तत्त्वनिष्ठ श्री महापुरुष भगवान ने श्री गीता अ० ४ श्लोक ३४ में कथन किया है। बस श्री गुरु-पूर्णिमा की पूजा का यही विधि-विधान है और इस विधान से की गई गुरु-पूर्णिमा का अकथनीय फल प्राप्त होता है। जो मन-वाणी-लेखनी का विषय नहीं है फिर तो नित्य गुरु-पूर्णिमा ही रहती है परन्तु इस विधि-विधान के अतिरिक्त प्रत्येक वर्ष धन-पदार्थ-मान-सम्मान से होने वाली और करवाने वाली गुरु-पूर्णिमा में दोनों तरफ खतरे की खाइयाँ तैयार रहती हैं फिर भी अज्ञान के घोर कालिमा पूर्ण वातावरण में इसका बड़ा भारी माहात्म्य गाया हुआ है और लोग करते भी हैं परन्तु उसका कोई महत्त्व न जीते और न मरने के बाद! 'श्री गीता अ०२ श्लोक ६६– अशान्तस्य कुतः सुखम्!''

गुरु-पूर्णिमा का वास्तविक सच्चा-सत्य स्वरूप श्री गीता अ०४ श्लोक ३४ में मिलता है और उस विधि-विधान पूर्वक गुरु-पूर्णिमा करने वालों को जो परम-पद प्राप्त होता है उसका कथन फिर आगे श्लोक ३५, ३६, ३७, ३८ और ३९ में किया है। अतः इन श्लोकों को अवश्य पठन-श्रवण करना चाहिये। ॐ शान्तिमय

सात्त्विक, राजसी, तामसी यह प्रकृति सदा से है और सदा ही रहेगी

श्री गीता-शास्त्र के विधान-अनुसार इस ब्रह्मलोक में भूतों की सृष्टि यानी मनुष्य समुदाय दो ही प्रकार के हैं। एक दैवी-प्रकृति वाला और दूसरा आसुरी प्रकृति वाला। श्री गीता अ०-१६ श्लोक ६ ।

इसमें दैवी-प्रकृति वालों का दो रूप गुणातीत सात्त्विक और इसी प्रकार आसुरी प्रकृति वालों का भी दो रूप राजसी एवं तामसी है। गुणातीत की स्थिति तो सात्त्विक-राजसी-तामसी से ऊपर की स्थिति है। यह तो मनुष्याणां सहस्त्रेषु में एक होता है। श्री गीता अ० ७ श्लोक ३ ।

तो सात्त्विक, राजसी, तामसी यह प्रकृति सदा से है और सदा ही रहेगी। ऐसे ही हंस, कोयल, कौआ सदा से हैं।

हंस की बुद्धि सूक्ष्म तत्त्व को ग्रहण करती है। एकाकी रहता है। श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ में श्री ब्रह्मवेत्ता समाधि श्री महापुरुष भगवान ने पृष्ठ सं० २१ पर आनन्द शान्ति का मार्ग और वर्तमान की परिस्थिति का ज्ञान समझाने में हँस बुद्धि की ही प्रधानता दी है। जैसे प्रारम्भ में संकेत रूप में समझाकर पुन: फिर आगे विस्तारपूर्वक कथन किया है– आरम्भ का सारांश- हंस बुद्धि वही है जो भगवत पदयुक्त आनन्द-शान्ति और सुख-शान्ति दायक सात्त्विक गुण-ज्ञान-भाव आचरण एवं प्रेमी पदार्थों को ग्रहण करे और भगवत-विधान के विरूद्ध दु:ख अशान्ति दायक राजसी तामसी गुण, ज्ञान, भाव, आचरण एवं प्रेमी-पदार्थों का त्याग करें।

वर्तमान का वातावरण ईर्ष्या-द्वेष युक्त कामाग्नि और क्रोधाग्नि से तपायमान तामसी मनुष्यों की बुद्धि से ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की मर्यादा का ज्ञान अर्थात् आज्ञाकारी बनने-बनाने का ज्ञान घोर अज्ञानमय ज्ञान से आच्छादित हो रहा है। जैसे वर्षा-काल में घनघोर काले-काले मेघों से आकाश आच्छादित हो जाता है।

हंस बुद्धि सूक्ष्म तत्त्व को ग्रहण करती है और सदा एकाकी रहता है। उसका दर्शन-श्रवण भी कम होता है। 'सात्त्विक'

कोयल अपनी मिठास मधुर वाणी से बालकों से लेकर बृद्धों तक को सम-शान्त प्रसन्न रखती हुई विचरती है। 'राजसी'

कौआ की बुद्धि अत्यन्त चंचल और अशान्त रहती है, इसीलिये जहाँ-तहाँ अपनी अशान्त वाणी का और चंचल स्वभाव का दर्शन-श्रवण कराकर, सदा अपमान पूर्वक कंकड़ पत्थर की मार खाकर उड़ जाता है। अधिकांश मनुष्यों से लेकर अन्य जीव भी इससे परेशान रहते हैं। हाँ कौवे की वाणी में यह विशेषता है कि वह थोड़े समय में ही मीटिंग करने के लिये बहुत संख्या में मण्डली को इकट्ठा कर लेते हैं। बहुत शोर-गुल कर आपस में कलह-क्लेश का दर्शन-श्रवण कराकर उड़ जाते हैं। (तामसी)

चाहे भौतिक क्षेत्र हो या अध्यात्मिक क्षेत्र हो अर्थात् चाहे आसुरी सम्पदा हो या दैवी सम्पदा हो; इस प्रकार कलह-क्लेश, ईर्ष्या-द्वेष, करने-कराने वाली बुद्धि से जन समाज घर परिवार बहु संख्या से प्राप्त कर लिया, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति कर ली, परन्तु कालान्तर में सब श्री गीता अ० ९ श्लोक १२ का हो जायेगा।

मोघाशा, मोघकर्माणो, मोघज्ञाना, विचेतस:।

अखण्ड-विधान के निर्माता ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की अखण्ड वाणी श्री गुण ज्ञान सागर ग्रन्थ के पृष्ठ ६ पर आनन्द-शान्ति का मार्ग में प्रकाशित है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान के नाम-रूप को प्रत्येक सेवायोग के कार्य को करते हुए घड़ी यंत्र के सदृश सतत् स्मृति करने के अभ्यास की वृद्धि करते रहना।

यह साधन हृदय में शीघ्र ही विशुद्ध प्रेम की और प्रसन्नता की वृद्धि करने वाला है। भगवत प्रेम-प्रसन्नता में मग्न रहना ही आनन्द-शान्ति का मार्ग है। ॐ शान्तिमय

विभिन्न स्थलों पर बैण्ड-बाजों की मधुर तरंगों का प्रभाव !

जैसे– संग्राम स्थलों पर बजने वाले बैण्ड-बाजे सैनिकों में जोश-उत्साह एवं देश-सेवा (रक्षा) के भावों की जागृति कर संग्राम में प्रवृत्ति कराने वाले होते हैं!

परेड स्थलों पर बजने-वाले बैण्ड-बाजे जवानों के अन्दर तेज-फुर्ती, उत्साह जोश की तरंगें पैदा कर देते हैं। उस समय उनको परेड की पोशाकें पहननी पड़ती है, बारातियों की नहीं।

सामाजिक उत्सव आदि के समय बजने वाले बैण्ड-बाजे की ध्वनि सामाजिक सेवा-कर्त्तव्यों में स्फूर्ति, जोश, उत्साह के साथ उमंगों को बढ़ाते रहने में सहायक होती हैं।

विवाह-शादी के स्थलों पर बैण्ड-बाजों की मधुर राग-रागनी मन-मोहक दर्शन, भविष्य में होने वाले राग-द्वेष, कलह-क्लेश, दुःख, अशान्तिदायक जीवन की यादों को उड़ाकर बन्धनों में जकड़ने वाले मधुर संगीतों के गीतों को श्रवण कराये जाते हैं एवं भोगों से कभी न तृप्त होने वाली पोशाकें ही धारण करते हैं।

मृत्यु स्थलों पर बजाये जाने वाले बैण्ड-बाजे की करुना दायक आवाजें दुःख, शोक के उतार-चढ़ाव में घुमाते रहते हैं।

धार्मिक क्षेत्रों में कथा-स्थलों पर बजने वाले बैण्ड बाजों की संगीतों की ध्वनि भक्तों में भक्ति की उमंगें, जोश पैदा करती रहती है। तत्पश्चात उत्साह, श्रद्धा पैदा कर भक्ति में विभोर करती है।

अन्त में दिमागी स्थल अर्थात् दिमागी रोगों की उग्रता के समय उपरोक्त बैण्ड बाजों की मधुर-ध्वनि की आवाज काम नहीं करती। उस समय तो दिमागी-रोग अर्थात् टेन्सन तो ब्रह्म-बल शक्ति सम्पन्न योग-सिद्ध महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' नाम की शीतल मधुर ध्वनि की संगीत ही समस्त दिमागी-रोगों की मुक्ति कर दिमागी-शान्ति और आत्मबल देती है। इस समय की पोशाक त्याग-वैराग्य भक्ति की होती है।

सभी बैण्ड-बाजों की ध्वनि जो भिन्न-भिन्न स्थलों पर उसके अनुरूप संगीतों को सुनाये जाते हैं उन सभी मधुर संगीतों में परम शुद्ध-पावन करने वाली श्री प्रभु पिता जी का यह पवित्र करने वाला नाम का संगीत सबसे श्रेष्ठ है। इस संगीत की मधुर प्रिय लगने वाली मिठास से तृप्त हो जाने पर सभी संगीतों से मन मुड़ जाता है। अन्त में इस संगीत में विभोर हो सदा के लिये परम सुख में लवलीन हो जाता है।

अतः यह पावनी-पवित्र युगल जोड़ी महामंत्र अनन्त शक्ति सम्पन्न हृदय कमल से प्रकट हुआ है। इसकी मधुर शान्त प्रिय ध्वनि में अपने मन, बुद्धि को श्रद्धा-प्रेम-विश्वास पूर्वक लगाते रहने में प्रयत्नशील बने रहना चाहिए।

स्मृति रहे! दुःख-अशान्ति दायक चिन्ता-क्रोध की सिद्धि को प्राप्त करना अथवा ध्यानयोग युक्त आनन्द-शान्ति दायक समता-प्रसन्नता की सिद्धि को प्राप्त करना पुरुषार्थ का विषय है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

आश्रम के पालनीय नियमों पर विचार

१. आश्रम में पधारने वाले पहले सूचना दें,और फिर पधारने का उद्देश्य और समय बतायें। आश्रम द्वारा स्वीकृति प्राप्त होने पर सत्संग में पधारने वाले आने-जाने का रिजर्वेशन करा कर ही पधारें।

२. वापस जाने का दिन और समय आश्रम द्वारा अधिकृति व्यक्ति को ही बताने का कष्ट करें।

३. आवश्यकतानुसार प्राप्त करने वाली वस्तु अधिकृति व्यक्ति द्वारा ही प्राप्त करें।

४. एकाएक किसी भी प्रेमी के कमरे में प्रवेश नहीं करेंगे, अनुमति प्राप्त होने पर ही प्रवेश करेंगे।

५. छात्राओं एवं महिलाओं के निवास-स्थान पर अन्दर जाने का सर्वथा-त्याग करेंगे। विशेष आवश्यकता पड़ने पर अनुमति प्राप्त होने पर ही जायेंगे। आवश्यक जानकारी अथवा पूछताछ अधिकारी से ही करेंगे।

६. आश्रम में निवास-कर्ता छात्र-छात्रायें १५ वर्ष की आयु से लेकर ४० वर्ष की आयु तक की छात्र-छात्रायें एवं महिलाओं से आपसी-सम्पर्क से दूर रहेंगे।

७. आश्रम में निवास करने वाले छात्र-छात्रायें अपने पास मोबाइल नहीं रखेंगे। अथवा सत्संग के समय मोबाइल बन्द रखेंगें।

८. आश्रम में आने-जाने वाले प्रेमियों को अपने आने-जाने का साधन स्वयं करना होगा, इस संकल्प का त्याग करना होगा कि हमको आने और जाने में आश्रम से साधन प्राप्त होगा। भगवत-कृपा से आटो का प्रबन्ध अच्छा है।

९. छोटा वाहन अथवा बड़ा वाहन अपने व्यक्तिगत या परिवार के कार्य के लिये नहीं उपयोग किया जायेगा। आटो की सुविधायें बहुत हैं।

१०. हर समय आपसी दर्शन-श्रवण अथवा अनावश्यक पूछ-ताछ और बातों पर कठोर संयम का शासन रखना चाहिए।

११. वापस जाते समय इस्तेमाल किये गये, पदार्थों को झाड़-लपेट कर सेवा-कर्ता को सम्भला कर और चाभी देकर ही जाना होगा।

१२. लाइट, पानी, खिड़की, दरवाजे सभी बन्द कर बाहर जाना चाहिये।

१३. शौचालय और स्नान-गृह में रखी चप्पलें वहीं इस्तेमाल करना चाहिये, कमरे से बाहर पहन कर नहीं जाना चाहिए।

१४. बालों को और सभी प्रकार के फेंकने वाले अन्य वस्तुओं को कूड़ेदान में ही डालना चाहिये। पास-पड़ोस की तरफ भूल से भी नहीं फेंके।

१५. हर स्थिति में मन को सम-शान्त, प्रसन्न रखते हुए सदा-सर्वदा आश्रम का वातावरण भगवत भावमय बनाये रखने में सतत प्रयत्नशील रहें।

१६. भगवत दण्ड-विधान से मुक्त होने के लिये सदा भगवत कृपा-प्राप्त कराने वाले श्रेष्ठ पुनीत कर्मों को करते रहना चाहिए।

१७. विशेष प्रार्थना है कि सत्संग के इस वार्षिक समय को अन्य विभिन्न प्रकार की चर्चाओं में व्यस्त रहकर अपने अमूल्य समय की सार्थकता को नष्ट नहीं करना चाहिए अपितु केवल आज्ञाकारी बनने-बनाने वाले भगवत् विधान की ही चर्चा करना चाहिए।

१८. निरन्तर स्मरण, चिन्तन की ही मुख्यत: रखनी चाहिए।

श्री गीता अ० १८ श्लोक ५८

आज्ञापालन करने से अध्यात्मिक मार्ग खुलता है

अनन्य विशुद्ध प्रेम-भक्ति करने की शक्ति प्राप्त होती है। आज्ञापालन करने से अर्थात् अध्यात्मिक मार्ग खुलता है– आज्ञापालन करने से? 'श्री गीता अ०१८ श्लोक ६५ और ६६'।

श्री गीता ज्ञान के पूर्व मानव-मण्डल का अध्यात्मिक मार्ग के द्वार शील्ड रहते हैं, जैसे श्री गीता के श्रोता भगवान के प्रिय बनने वाले शिष्य का था। ''श्री गीता अ०२ श्लोक ७ और ६६''

श्री महापुरुष भगवान की यश कीर्ति को उनके आदर्श पवित्र गुण-ज्ञान को, उनकी दिव्यता के प्रभाव को, पद, प्रतिष्ठा को, उनकी आज्ञा के विपरीत हम आपस में राग-द्वेष, कलह-क्लेश, स्वार्थ, अहंकार को लेकर उजागर एवं प्रचार-प्रसार नहीं कर सकते, बल्कि हम अपने स्वभाव वश आपस में विचार भिन्नता से उसको धूमिल करते हैं, कलंकित करते हैं। प्रभु पिताजी अपनी पद-प्रतिष्ठा-कीर्ति में सदा प्रतिष्ठित हैं। उन्हें क्षण-भङ्गुर, नाशवान मानव से क्या लेना, जैसे सूर्य को संसार के क्षणिक-नाशवान अरबों लाइट की क्या आवश्यकता, वह तो अपने प्रकाश से सदा परिपूर्ण है।

नवीन अथवा जिज्ञासु सम्पर्क में आकर जब हमारे आचरण-व्यवहार और स्वभाव को देखता है यदि भगवत-विधान के विपरीत राग-द्वेष मय हमारा व्यवहार आचरण होता है तो वह फैलाने वाली श्रद्धा को समेट लेता है, तो क्या हुआ? हमारे द्वारा उसकी श्रद्धा-प्रेम के बीज का अंकुर नष्ट हुआ। अत:

पारुष्यं होकर हम प्रेमी-पदार्थों पर अपना प्रभुत्त्व नहीं कायम कर सकते।

कोयल अपनी मीठी-मधुर वाणी से बच्चों से लेकर आयुष्वानों तक को मोहित प्रसन्न कर देती है।

विश्व-पूज्यनीय भगवान श्री राम के समय की गाथा पठन-श्रवण में आती है कि जब मन्थरा ने अपने द्वेष-बुद्धि से अपना प्रभुत्व जमाने के लिये छल-कपट पारुष्यं वाणी का प्रयोग किया था तब यद्यपि परिवार-समाज में कोहराम तो मच गया था, परन्तु उसका राग-द्वेष का पारुष्यं नि:सफल रहा। आखिर नाशवान, अनित्य, क्षणभंगुर दु:ख रूप प्रेमी पदार्थों पर प्रभुत्त्व जमाने से मिलेगा क्या? श्री गीता अ० ९ श्लोक ३३।

इसमें बहुमूल्य समय शक्ति मन, बुद्धि लगाना, बुद्धिमता नहीं है। गीता में भगवान ने चेतावनी दी अ०५ श्लोक २२ में 'न तेषु रमते बुधा:'।

पूज्य श्री गुरुवर को जब आज्ञाकारी बनने का रहस्य समझ में आया, तब समझ में आते ही समस्त धन, सम्पत्ति, प्रेमी, पदार्थ, भूमि-भवन, मान-सम्मान का वमन की तरह त्याग कर दिया और अपने पूज्य श्री गुरुदेव भगवान के पूर्ण रूप से समर्पण हो गये अर्थात् 'करिष्ये वचनं तव' हो गये? अर्थात् आज्ञापालन की परमशक्ति से ''ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम' हो गये। अ०१८/५५।''

परन्तु इस तत्त्व से वंचित संसार के प्रेमी पदार्थों को आज्ञाकारी बनाकर स्वामी-मालिक बनने के कामी मनुष्य अपने बहुमूल्य दुर्लभ समय का दुरुपयोग करके पुन: भविष्य में आसुरी योनियों में गिरते हैं। श्री गीता अ०१६ श्लोक २०।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी की कृपा से मानव-जीवन मिल गया, मानो असीम, अपार, अनन्त सम्पत्ति का खजाना मिल गया। परन्तु अज्ञान विमोहित कामनाओं से तपायमान अज्ञानी मानव द्वारा दी गई चाभी से उसका द्वार नहीं खुलेगा। वह तो तत्त्वदर्शी ब्रह्मवेत्ता द्वारा प्राप्त चाभी से ही खुलेगा। फिर क्या होगा। श्री गीता अ०२ श्लोक ७२। अन्यथा अज्ञान विमोहित से प्राप्त ज्ञान १६/२३-२४। ॐ शान्तिमय

अधिक बच्चे पैदा करना अर्थात् कमर तोड़ मेहनत। उम्रभर खिलाओ-पिलाओ चिन्ता, नाराज़गी और क्रोध।

अखण्ड-विधान के निर्माता सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान, नित्य स्मरणीय सत्य-स्वरूप ॐ श्री महापुरुष भगवान शरणं।

ॐ आनन्दमय ! ॐ शान्तिमय !

पूज्य बहन अन्नपूर्णा जी

हम लोग संसार-रूपी धर्मशाला में यात्री के रूप में कुछ समय के लिये आते हैं और समय पूरा होते ही इस धर्मशाला को छोड़ कर चले जाते हैं।

स्वप्नवत इस संसार में सबकुछ अनित्य, क्षणभंगुर और नाशवान है; आज तक साधारण मनुष्यों की तो बात ही क्या, धन, जन सम्पन्न, बल-शक्ति सम्पन्न, मान, सम्मान-कीर्ति सम्पन्न, बड़ी-बड़ी सिद्धियों से सम्पन्न हस्तियाँ भी अन्त में अपने साथ निराशा के साथ खाली हाथ फैला कर बिदा हुये ! इस दु:खमय संसार में सभी धर्म-रहित मरणशील है। केवल मात्र सदा जन्म-मरण से रहित नित्य अजन्मा अजर, अमर, सर्वज्ञ, ॐ आनन्दमय परमात्मा ही सदा से हैं और सदा ही रहेंगे, उनका स्वरूप अनन्त, अपार, असीम और आनन्दमय है।

अपरम्पार ब्रह्म में समाहित तत्त्वदर्शी, ब्रह्मदर्शी, ॐ आनन्दमय के अखण्ड आनन्द में तदाकार श्री ध्यान समाधिमग्न श्री महापुरुष भगवान के संयोग में रहने का महत्वपूर्ण शुभ अवसर श्री आनन्द-पूर्णा जी को अपनी छोटी सी आयु १४-१५ वर्ष की अवस्था में ही प्राप्त हो गया था और दो वर्ष तक नित्य-संयोग में रहकर पूर्ण आनन्द-शान्ति और सुखों का अनुभव कर उसको अपने हस्तकमलों द्वारा लिखकर आश्रम में श्रद्धालु एवं जिज्ञासु भक्तों में श्रद्धा, प्रेम, विश्वास बढ़ाने के लिये आश्रम में प्रेषित किया, जो अभी भी आश्रम के संग्रहालय में सुरक्षित है।

श्री गुरुदेव समाधिमग्न महापुरुष भगवान के सम्पर्क में बीते हुये अमूल्य रत्न रूपी समय-शक्ति के प्रभाव से श्री आनन्द-पूर्णा जी ने इस विशाल भव सागर संसार में होने वाली अनेकों विषम परिस्थितियों में, घटनाओं में, वातावरण में सुख-दु:खों में लाभ, हानि में, मान-अपमान में, स्तुति-निन्दा में, सदा अपने मन को सम-शान्त रखते हुए जीवन-यात्रा के लगभग ७२ साल को पूरा कर १५ अक्टूबर २०१४ को सदा के लिये ब्रह्म-शक्ति में समाविष्ट हो गईं।

श्री आनन्द-पूर्णा जी की जीवन की प्रारम्भ की यात्रा और अन्तिम समय की जीवन यात्रा श्री गुरु-देव भगवान की छत्र-छाया में चली। आश्रम के प्रति उनका अटूट श्रद्धा, प्रेम, विश्वास था आश्रम में निवास करने वालों के साथ विशेष स्नेह था, प्रेम था।

श्री गुरुदेव भगवान की प्रेम-भक्ति में ही विशेष अनुराग था, प्रेम और श्रद्धा थी, उत्साह, उमंग बना ही रहता था। इन्हीं सब भावों से सदा अपने मन को सम-शान्ति बनाये रखती थी, आज वह सदा के लिये ॐ आनन्दमय अनुरागी भक्तों के लिये पथ-प्रदर्शक बन गई हैं !

भगवत् विधान के विरुद्ध सौन्दर्य-ऐश्वर्य के भोक्ताओं का जीवन पश्चातापमय होता आया है।

....

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र जपने से, श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में प्रकाशित गुण-ज्ञान को धारण करने से आपका मन शान्त और प्रसन्न होगा।

अखण्ड-विधान

ॐ श्री प्रभु पिताजी के आज्ञाकारी बनना उनकी ब्रह्मवाटिका के मालिक न बनना।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के आज्ञाकारी बनने का विधान श्री गीता शास्त्र में श्री योगेश्वर भगवान ने श्री गीता अ०२ श्लोक १४-१५ से ही प्रारम्भ किया था फिर श्लोक ४५ में कथन कर श्लोक ५२-५३ में विशेष रूप से सावधान कर– श्लोक ५५, ६१, ७१ में आदेशों का महत्त्व कथन किया। और इसके विपरीत स्थिति का कथन श्लोक ६६ में कथन किया। ॐ शान्तिमय।

छलनी में पानी तभी नजर आयेगा, जब उसके सारे छेद बन्द कर दिये जायें, यदि एक भी छेद रहेगा तो वह छलनी को सदा खाली रखेगा। इसलिये कहा कि प्रजहाति यदा कामान्, २/५५ और विहाय: कामान्य: सर्वान्, अ०२ श्लोक ७१।

संसार के प्रेमी-पदार्थों से डरने वाला प्रतिकूल-वातावरण में, परिस्थितियों में, घटनाओं में घबराने वाला एवं कामम् क्रोध्, भयम्, वेगं होने वाला ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी की कृपा का पात्र नहीं बन सकता। वह तो ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के दण्ड-डर से अभय हो जाता है। श्री गीता अ० ७ श्लोक २७ एवं

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के विधान से डरने वाला संसार के मोह-ममता के कठिन बन्धनों से सम्पूर्ण दु:खों से सदा के लिए मुक्त हो जाता है। श्री गीता अ० १८ श्लोक ५७, ५८। परन्तु कोई-कोई अ० ७ श्लोक ३ ।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी का अखण्ड विधान सुनने-सुनाने में अत्यन्त प्रिय लगता है। परन्तु मोबाइल की घण्टी और लैपटॉप का विषयी मन को दर्शनों से अप्रिय लगता है। हाँ अप्रिय लगने पर भी वह अपने चपेटे में घुमाये बिना छोड़ता नहीं है। क्योंकि अखण्ड-विधान श्री गीता अ० १८ श्लोक ६१ । यह कर्मों के अनुसार भ्रमण कराता है- भगवत इच्छा, स्वइच्छा, अनिच्छा। ॐ शान्तिमय।

करिष्ये वचनं तव

मैं आपकी आज्ञा का पालन करुँगा बस– इसके आगे ज्ञान की धारा समाप्त हो जाती है

अध्यात्मिक इतिहास में भूमि, भवन, धन, दौलत, मान-सम्मान का इतना महत्त्व नहीं है जितना कि ब्रह्मवेत्ता-तत्त्वदर्शी ध्यान-समाधिमग्न महापुरुषों की आज्ञापालन करने का है।

भगवान श्री राम ने आज्ञापालन करने के लिये घर-कुटुम्ब-परिवार, जन-समाज का, माता-पिता, भाई-पत्नी का भी त्याग कर दिया था। आज्ञापालन में महान-अद्‌भुत दिव्य शक्ति का प्रवेश होता है, जो कर्मों के समस्त बन्धनों को काटकर आनन्दमय ब्रह्मपद की प्राप्ति करा देता है। श्री गुरुवर ने आज्ञापालन की अद्‌भुत अदृश्य-शक्ति के प्रभाव से ३५ वर्ष की अवस्था के पश्चात् भी ८ वर्ष में ही उस परम अलौकिक, परम पद को प्राप्त किया।

ब्रह्मपदाधीश सद्‌गुरुदेव की आज्ञापालन करने का स्वभाव असीम, अनन्त भगवत-भावों की प्राप्ति कराता है।

प्राय: भागवत-सप्ताह सुनने वाले कथा, उपदेश सुनने वाले, सत्संगी प्रेमी भक्त कहलाने वाले एवं स्वामी जी, पण्डित जी, पुजारी जी, महात्मा जी भी माया नगरी के सभी-फार्म भरकर डिग्रियाँ और सर्टिफिकेट भी ले लेते हैं। घर-परिवार, सन्तान-समाज की वृद्धि भी करते-करवाते हैं। ऐसे माया-नगरी के भक्तगण सदा दु:खी, अशान्त-परेशान होकर माया-पति से होने वाले परम-लाभ से सदा के लिये वंचित होकर बारम्बार आसुरी योनि में जन्मते और मरते रहते हैं।

प्राचीन-काल की स्मृति

ॐ सत्य स्वरूप श्री आनन्दमय भगवान शरणम्

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

पूज्य डॉक्टर साहेब,

सादर ॐ आनन्दमय।

एक रविवार और बीता। सुबह से ही एक विशेष चहल-पहल थी, श्री महापुरुष भगवान तड़के ही आ गए थे। प्रेमियों में बड़ा ही उत्साह दीख रहा था। श्री महापुरुष भगवान जी ने जो कि अपने श्री मुख से अभी जाने के लिए स्वयं कुछ कहा नहीं है पर लोगों में यह चीज़ पूरे तौर से बस गई है कि भगवान जी अब जा रहे हैं और अब एक-एक दिन गिना जा रहा है। श्री भगवान जी के उपदेश की भी धारा बदल सी गई है। कोई नया ज्ञान नहीं चला रहे हैं बल्कि इन चार महीनों के ज्ञान की पूर्ति कर रहे हैं।

इस रविवार को सेवा-सम्मेलन की बैठक भी ३ घण्टे की रही। भगवान जी के लक्ष्मण झूला पधार जाने के बाद यहाँ की कार्यवाही कैसी होगी तथा श्री भगवान जी के साथ हरिद्वार कुम्भ में ध्यान, ज्ञान व प्रचार के लिए क्या-क्या करना है इस पर विचार किया गया।

ज्यों-ज्यों दिन बीतता जाता है, नये प्रेमियों की तादाद बढ़ती जा रही है। इस रविवार को २२२ प्रेमियों ने जलपान में हिस्सा लिया व ५० व्यक्तियों से अधिक ने सम्मिलित प्रसाद पाया। शाम का सत्संग भी बड़ा ही दिलकश रहा। बहुत से हमारे विशेष प्रेमी भी मित्र बनते जा रहे हैं।

हमेशा की भाँति इस रविवार को भी ४६ देवी व पुरुषों ने मिलकर ध्यान का प्रदर्शन किया जिनकी सूची निम्नलिखित है–

१. श्री राम किशोर जी	१० घण्टा
२. श्री आनन्द देव जी	१० घण्टा
३. श्री नवल किशोर जी	१० घण्टा
४. श्री ओंकार नाथ जी	८ घण्टा ५५ मिनट
५. श्री अनन्तू लाल जी	८ घण्टा ३० मिनट
६. श्री सिया राम जी	५ घण्टा ३५ मिनट
७. श्री आनन्द लखन जी	६ घण्टा ४० मिनट
८. श्री सुशील कुमार जी	६ घण्टा २० मिनट
९. श्री दया राम जी	२ घण्टा
१०. श्री राम चन्द्र जी	१० घण्टा
११. श्री बद्री प्रसाद जी	६ घण्टा ५५ मिनट
१२. श्री वित्तू लाल जी	१० घण्टा
१३. श्री राजेन्द्र नारायण जी	२ घण्टा ४५ मिनट
१४. श्री ओंकार नाथ जी	२ घण्टा
१५. श्री बाबू लाल जी	२ घण्टा ३० मिनट
१६. श्री सत्य नारायण ला जी	४५ मिनट
१७. श्री आनन्द दास जी	५ घण्टा ५ मिनट
१८. श्री राजेन्द्र जी	१ घण्टा ३० मिनट
१९. श्री वास्तव जी की माता	५ घण्टा
२०. श्री सत्य नारायण जी की देवी	३ घण्टा ३० मिनट
२१. श्री लाल जी	६ घण्टा ४० मिनट
२२. श्री फूल चन्द की माता	९ घण्टा २५ मिनट
२३. श्री कन्हैया लाल की देवी	२ घन्टा २५ मिनट
२४. आनन्द कुमारी	७ घण्टा ४० मिनट
२५. आनन्द सोनी	२ घण्टा ३० मिनट
२६. शिव पति जी	४ घण्टा ५० मिनट
२७. श्री कल्पनाथ जी	२ घण्टा ४५ मिनट
२८. श्री राधा मोहन जी	२ घण्टा
२९. श्री अरिबिका प्रसाद	२ घण्टा ४० मिनट
३०. श्री दीप नारायण जी	२ घण्टा २२ मिनट

३१.	श्री आनन्द प्रयाग जी	२ घण्टा
३२.	श्री मनोहर लाल जी	२ घण्टा २० मिनट
३३.	श्री मनोहर लाल (२)	२ घण्टा २५ मिनट
३४.	श्री मदन लाल जी	३ घण्टा ३० मिनट
३५.	श्री स्टेशन मास्टर साहिब	२ घण्टा ४५ मिनट
३६.	श्री फूलचन्द के पिता	२ घण्टा ३० मिनट
३७.	श्री हेम राज जी	२ घण्टा २० मिनट
३८.	श्री राधा कृष्णा जी	४५ मिनट
३९.	श्री राजेन्द्र सिंह जी	२ घण्टा
४०.	श्री आनन्द प्रसाद जी	२ घण्टा
४१.	श्री आनन्द लखन की माता	२ घण्टा २० मिनट
४२.	आनन्द कली जी	२ घण्टा
४३.	ध्यान प्यारी जी	४ घण्टा ३० मिनट
४४.	श्रीमती चमेली जी	३ घण्टा
४५.	श्री बाबा मंगल दास	३ घण्टा ४५ मिनट
४६.	श्री मनोहर लाल जी	३ घण्टा

ज्ञान– इसके अलावा २० या २२ लोग सेवा कार्य में होने की वजह से ध्यान में नहीं बैठ सके जिनमें वर्मा जी, आनन्द कृष्ण, सोनी तथा आनन्दपूर्णा जी के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री अर्जुन दास जी बालकों की सेवा में रहे।

क्या लिखूं ज्यों-ज्यों श्री महापुरुष भगवान जी के पधार जाने का समय नजदीक आता जाता है कलम नहीं चलती। आदर्श दिव्य विभूति आनन्दस्वरूपा जी जिस दिन सत्संग में पधार जाते हैं इसकी रौनक कई गुणा बढ़जाती है। वर्मा जी ने भी आकर यहाँ की जीनत बढ़ा दी है। आनन्दपूर्णा जी तो प्रात: के सत्संग की जान ही हैं जो अपने मधुर स्वरों से श्री भगवान के प्रति प्रेम भरे शब्दों में गायन के रूप में सुनाकर सबको कृतार्थ कर रही हैं, सोनी जी का साथ हो जाना तो फिर सोने पर सुहागा है। देखें श्री महापुरुष भगवान जी के बाद कैसी हालत रहती है।

सेवक

बालक राम वर्मा

(२०-०३-१९५६)

(नोट– इस ध्यानयोग का संज्ञान गीता प्रेस के संस्थापक श्री जयदयाल जी गोयन्दका को भी थी।)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

पूज्य भक्त समाज के समक्ष हितकारी और परम हितकारी ब्रह्म-वाक्य उच्चारण किये जा रहे हैं–

वैधानिक ब्रह्मज्ञान सिनेमावत् पठन-श्रवण और कथन करने योग्य नहीं है। अस्तु ....

आज्ञाकारी भक्त के लिये जो मानसिक प्रतिकूलता आती है। वह गुणों को धारण करने के लिये और गुणों की वृद्धि करने के लिये आती है, तथा पदार्थ जन्य प्रतिकूलता आती है, वह ज्ञान को धारण कर ज्ञान की वृद्धि के लिए आती है।

स्व-इच्छाचारी भक्तों को जो मानसिक प्रतिकूलता आती है, वह दु:खों के और अशान्ति के विकास के लिये आती है, तथा पदार्थ जन प्रतिकूलता-सुख के नाश के लिये आती है, तथा आज्ञाकारी भक्तों से द्वेष-वैर कराने के लिये आती है।

श्रद्धावान भक्त-जन वैधानिक ब्रह्म-वाक्यों को मनोरंजन की इच्छा से हृदय-कोष में संग्रह नहीं करते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

जो अपनी आज्ञापालन कराने का आग्रह करता है अर्थात् मैं श्रेष्ठ हूँ, बुद्धिमान हूँ, ज्ञानी हूँ इत्यादि, तो वह मूर्ख बनता है- ३/३२ और जो आज्ञापालन करने का अभ्यास करता है, वह ज्ञानी पण्डित बनता है। श्री गीता अ०५ श्लोक १८ ''पण्डिता: सम दर्शन:'' पुन: श्लोक १९-२०।

मानव देह प्राप्त होने पर परम लाभ क्या है?
ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का नित्य संयोग।

गीता अ० ६/१० से ३२

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का ही निरन्तर स्मरण-चिन्तन करना है ?

उपस्थित सत्य विधान को पठन-श्रवण करने के उद्देश्य से उपस्थित श्रद्धालु-समाज को सप्रेम पूर्वक प्रेम अञ्जलि अर्पण करते हुए, आज के भाग्यशाली महत्व दिवस पर परम हितकारी महत्वपूर्ण विषय को ही कथन किया जायेगा।

सबसे महत्वपूर्ण और सत्य क्या है ?

हम इस अनित्य, सुखरहित क्षणभङ्गुर संसार में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के आज्ञाकारी बनने-बनाने के लिये ही आये हैं। गीता अ० ९/३३।

उनके रचित इस संसार-सागर के प्रेमी-पदार्थों के मालिक बनने-बनाने के लिये नहीं आये हैं। मेरा-मेरी बनाने का क्रूर कार्य मानव का धर्म नहीं है, यह तो पशु-पक्षियों का और जानवरों का है। ऐसे कर्म-धर्म करते अनन्त जन्म बीत गये। अब दया करके भगवान ने यह मानव जन्म दुःखदाई कर्मों से सदा मुक्त होकर आनन्दमय प्रभु पिताजी के आज्ञाकारी बनने-बनाने वाले धर्म-कर्मों को करने के लिये यह परम शुभ अवसर दिया है। इसीलिये ऐसे शुभ अवसर के लिये महापुरुषों ने चेतावनी दी है कि–

यह अवसर चेत्ता नहीं, पशु ज्यौं पाली देह।
आनन्दमय नाम जाना नहीं, तो अन्त पड़ी दुःखों की गेह।

मानव की सुव्यवस्था के लिये, जीवन यात्रा चलाने के लिये संसार में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के विधान विरूद्ध अनेकों प्रकार के नियम-विधान, कानून, व्यवस्थायें राज्य-सत्ता में बनते आये हैं एवं बनते ही रहते हैं, परन्तु अनादिकाल से मनुष्यों द्वारा बनाये गये, नियम-कानून कुछ-कुछ समय पश्चात् परिवर्तन एवं नष्ट-भ्रष्ट होते आये हैं। सदा एक से नहीं रहे। अ० ३/३२।

सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय परमात्मा ने अपनी इस ब्रह्मवाटिका को सुव्यवस्था-पूर्वक चलाने का जो विधान-नियम बनाया है; वह सदा से है, और सदा ही रहेगा; क्योंकि ॐ आनन्दमय परमात्मा सदा से हैं और सदा ही रहेंगे। उनके विधान के विपरीत चलने वाले एवं हस्तक्षेप करने वाले सदा से नष्ट-भ्रष्ट होते आये हैं और होते ही रहेंगे। श्री गीता अ० ३ श्लोक ३२, अ० १८/५८।

ॐ आनन्दमय परमात्मा का अखण्ड विधान क्या है कि इस ब्रह्म-वाटिका में ॐ आनन्दमय भगवान के आज्ञाकारी बनना और बनाना तथा इस ब्रह्म-वाटिका के प्रेमी-पदार्थों को मेरा-मेरी बनाकर मालिक, स्वामी शासक नहीं बनना।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के आज्ञाकारी बनने का क्या विधान है, क्या साधन है? तो इसके लिये सर्व-शास्त्रमयी श्री गीता में अमूल्य वचन रत्नों का भण्डार है जो साक्षात् अखण्ड-विधान के निर्माता के हैं और उसका सार श्री विश्वशान्ति ग्रन्थों में हैं और इसका भी सारांश श्री सच्ची प्रेम भक्ति के २१ मंत्रों में है।

एवं अखण्ड-विधान को धारण करने की पूर्ण शक्ति देने वाला वैदिक सनातन ब्रह्मवाची योग-सिद्ध महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' समस्त मानसिक संकटहारी है। इसको निरन्तर जपने के अभ्यास से सदा सुख, शान्ति और आनन्द के साथ प्रेम प्रसन्नता से मन स्थिर रहता है।

मानव का शरीर का निर्माण दिव्य-शक्ति के द्वारा ही किया जाता है और शक्ति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त साथ रहती है। श्री गीता अ० १५/१५ के अनुसार वह सदा इसकी सम्भाल, रक्षा-वृद्धि करती-रहती है। संसार में अपना प्रिय से प्रिय माने-जाने वाला भी सदा साथ नहीं रहता। साथ में रहने वालों का कुछ-कुछ समय के बाद परिवर्तन और वियोग होता आया है। परन्तु वह दिव्य शक्ति २४ घण्टे साथ रहती है।

संसार की समस्त शक्तियाँ सदा अशान्त परेशान, विक्षप्तता पैदा करती रहती है। मन सदा अस्थिर, चंचल बना रहता है एवं अंत समय समस्त पद-सम्पत्ति, पद-प्रतिष्ठा, जन-परिवार, मोह-ममता सब छूट जाती है। हाँ वही दिव्य-शक्ति साथ जाती है। अतः साथ जाने वाली परम दिव्य-शक्ति का ही जन्म से ही स्मरण, चिन्तन करने का अकथ-परिश्रम करना चाहिये। शक्ति रूप में वह स्वयं ही सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय परमात्मा ही विद्यमान है। श्री गीता अ० ८ श्लोक ५, ६, ७। ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

।। पाप कर्मों की वृद्धि का ज्ञान।।

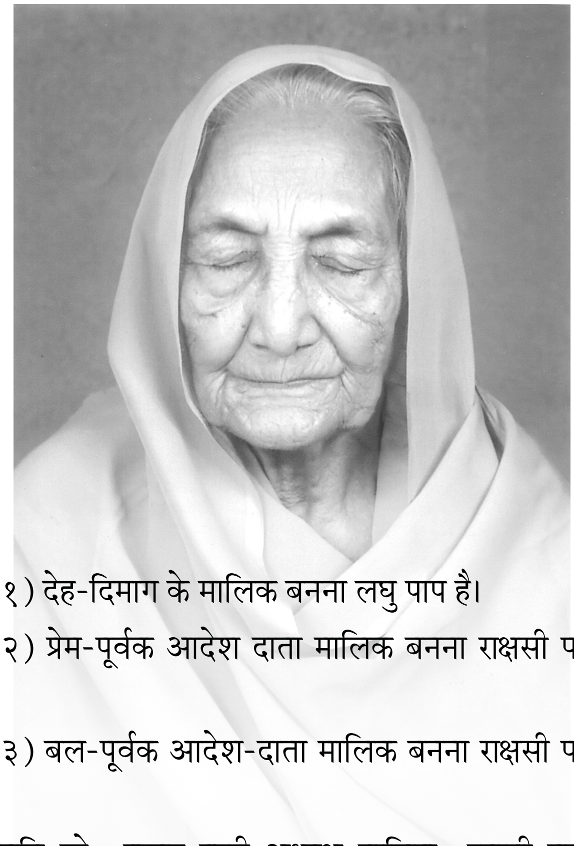

(१) देह-दिमाग के मालिक बनना लघु पाप है।

(२) प्रेम-पूर्वक आदेश दाता मालिक बनना राक्षसी पाप है।

(३) बल-पूर्वक आदेश-दाता मालिक बनना राक्षसी पाप है।

स्पृति रहे– कलह-कारी अध्यक्ष मालिक- स्वामी बनने वाले दिमाग की अति शीघ्र राख बना देते हैं।

हे श्री आनन्दमय प्रभो। सुख किसको देते हैं?– नमक हलाल को। सुखों के लक्षण श्री गीता अ० २ श्लोक ६४-६५ में प्रकाशित हैं।

हे श्री न्यायकारी प्रभो, दु:ख किसको देते हैं? नमक हराम को । दु:खों के लक्षण श्री गीता अ० २ श्लोक ६२-६३ में प्रकाशित हैं। स्मृति रहे– कलह-कारक दिमाग की अतिशीघ्र राख बना देते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

दिमाग में निरहंकारी दया-प्रेम युक्त समता का दर्शन ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का दर्शन है। दिमाग में अहंकारी दया-प्रेम युक्त क्रोध का दर्शन आत्म-शक्ति विनाशक शेर का दर्शन है।

दिमाग में ध्यान-अमृत पान की प्रसन्नता का दर्शन धर्मात्मा का दर्शन है। दिमाग में तन, धन, जन की प्रसन्नता का दर्शन नाराज़गी और चिन्ता-अग्नि का दर्शन है।

दिमाग में अहंकारी द्वेष का दर्शन विषदायक सर्पनी के अण्डों का दर्शन है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

दिमागी परेशानियों द्वारा और कलह-क्लेशों द्वरा दण्ड दिलाने वाले शत्रु कौन है।

अपने आज्ञाकारी बनाने के दिमागी विचार 'दण्ड-विधान श्री गीता अ० १६ श्लोक ४ से २१ तक प्रकाशित है।'

मानव-दिमाग को मूर्ख-पागल बनाने वाला शत्रु कौन है ?

धन-मान, कामी, अहंकारी प्रेम ।

धनमानमदान्विता: अहंकारम्

।। ज्ञानविज्ञान नाशनम् ।।

चित्त की चंचलता, नाराज़गी, क्रोध, चिन्ता, भय, रुदन और वैर-द्वेष यह मानसिक-बौद्धिक संकट है।

ॐ श्री ब्रह्म-विधान विरूद्ध स्वेच्छाचारी स्वार्थी-बुद्धि द्वारा क्या दण्ड मिलता है।

समाधान– चिन्ता, नाराज़गी, क्रोध, भय और रुदन अर्थात् जीवन को कलह-क्लेश युक्त दु:खमय-अशान्तिमय बनाते रहते हैं।

अखण्ड-विधान विरूद्ध स्वेच्छाचारी द्वेषी-दिमाग को नष्ट ही कर डालते हैं। श्री गीता अ० ३ श्लोक ३२। एवं कामम्-क्रोधम् अर्थात् काम-क्रोध के वेग की सहन-शक्ति समाप्त कर देते हैं और नर:, युक्त:, सुख का अभाव कर देते हैं। फिर नर: न होकर पशुवत जीवन हो जाता है। श्री गीता अ० ५ श्लोक २३।

स्वेच्छाचारी इन्द्रिय-विषयी दिमाग की इन्द्रिय-भोगों के सुख में ही आसक्ति हो जाती है जो नि:सन्देह दु:ख के ही हेतु हैं। मान-सम्मान स्वामी जी, मालिक जी, आदेश दाता जी, अध्यक्ष-मंत्री आदि सभी की प्रतिष्ठा का लोभ इन्द्रिय-विषयी जन सुख भोग ही है। अखण्ड-विधान के श्रद्धालु, बुद्धिमान इन्द्रिय-विषय जन-भोगों में नहीं रमते। अज्ञानी, मूर्ख, बुद्धिहीन ही इनमें रमण करते हैं और कठिन दण्ड के पात्र बनते हैं। १६/२०